वाद्यम्म

প্রভাকরসপাদক পদিরচন্দ্র গুণ্ডের ছাত্র এবং শীল্ম কি কালেজের দ্বিতীয় শিক্ষক

ক্ষেজুর নিবাসি

গ্রীরাধামাধন মিত

अभीज।

्र औलीमनाथ माहा कर्जुक

প্ৰকাশিত।

কলিকাতা

स्राम-यरम किलानगंप विश्वाम এও কোং कर्ज्य बाह्यि मृज्ञीयुद्ध ३० मध्याक उत्तम मूक्ति छ।

विकाशन !

আ্যার ভাষতক বছদেশীয় কবিরুল-চূড়ামণি र्क्षाहरूस ७४ महानज करान कारन करान करान भक्ति इत्यारिक किन्तिम सरस्यक महाद्वा मामिक প্রভাকরণার সম্পাদনের ভার এছণ করেন। এইয়াপে কিয়দিবস বিগত হইলে পর আদি তাঁহার এক জন ছাত্র বলিয়া সামার উপরেও উক্ত গুরুতর কার্য্যের ভার সম-র্পিত হয়। আমি মাসিক পত্রের সম্পাদকীয় আসতে छेशितिको इटेंग्रा करु पृत शर्यास क्रक्कांधा इटेंहर शाहि-যাতি তাহা কেবল গুণ্মাহক গুণ্নীল মান্দক-প্রপা-ঠক মহাশ্যের।ই বলিতে পারেন, এ বিষয়ে কানাম किए गांज रक्षकः नारे। अरे मार्गानः कुछ अल् छ প্রবন্ধটা প্রচারিত হইল তাহা মাল্লিখিত প্রথম এবং ছিতীয় মাসিক পত্তে একবার প্রকাশ করিয়াছিলাম। মানি ক্রজ্ঞতা-দহকারে স্থীকার করিতেছি যে, যথন উक्ত मण्ड अंडांकर शदा ममुम्बि इश उथन बाराकंडे ভাষার প্রতি প্রতি প্রকাশ করিতে অন্যথা করেম ৰাই। একণে কভিপয় বন্ধুর অনুরোধ বশত:ই ভারা পুনর্কার মুক্তিত করিতে বাখ্য হইলাম।

धरे शुंखक वांतक ଓ वांतिकांगरनंत्र शारोंशर्यांनी ছই তে পারিবে এমন প্রত্যাশাও করিতেছি। মন্ত্রচিত धारम, विजीय, पृजीय, खंदर हर्ज्य जांग कविजाननी त्व ममख मासूकून छेरमाहणां छ। दिन्यानग्राश्यक अ भिक्यक-महानात भारा वह छाटम वह विमानिता वावका ए ममा-মুভ হুইয়ালে, কবিতাবলীর পঞ্চম ভাগ যত দিন প্রচারিত না হয় তত দিন পর্যান্ত তাঁহারা যদি অমুঞ্রছ-পুর্বাক চতুর্য ভাগের পর স্বাস্থ অরীনস্থ পাঠশালায় এই গ্রান্ধ প্রচলিত করেন ভাছা হইলে জামার পরিশ্রম ও বত্তের সাফল্য হয় এবং আমিও থাবজ্জীবদের নিমিত্ত কৃতজ্ঞতাঋণে বদ্ধ হই। এই পুস্তাকর প্রতি সকলেই দে অনুরাণ প্রধাশ করিবেন এমন প্রত্যাশী করিতে পারি না, তবে মহাশয় লোকেরা উৎসাহ বর্দ্ধনার্থ সমু-গ্রন্থ করিলেও করিতে পারেন। পরিশেযে कशमीचरहर मिकटडे धार्थमां এई स्थ. रालकवालिका-र्भक्ष अहे अन् भार्व कतिया विनारमाध्याव सम वित्र छ मं इन्।

> জীরাধামাধব মিতা। সাং জেজুর।

द्वादथन्मृपश् ।

अक्षनर्गन

রপক।

এক দিন একা আমি, করিয়া শারন।
ভাবিতেহিলাম কর, মুদিয়া নয়ন ॥
নানা ভাবে ভরা ছিল, মান্য-ভাঙর।
না ফুরাতে এক ভাব, পুনঃ আমে আর ॥
স্থকর ছংখকর, ধরার ব্যাপার।
কত মত মনে এলো, সংখ্যা নাই ভাব ॥
অপরপ ভাব শেষে, হইল উনয়।
বাড়িতে লাগিল ক্রেনে, কেবল সংশ্যা ॥
সংসারেতে হিতকর, বিদ্যা আর ধন।
কি ছোট কি বড়, কিসে করি নিরপান ॥

নিজাহার পরিহার, করিয়া স্বাই।
ভামিতে ধনের ভরে, অবসর নাই।
দেশে দেশে, প্রামে প্রামে, নগরে নগরে
শিলের কারণ লোক, পরিশ্রম করে।

र्गांग्टर वानिका करत, वोफाकेटल वस । লা তাতে বন্ধর মায়া, যদি হার অনু॥ . जुशिक शांतमम वर्षे, अंका काशमात । जार्थम अन्ती नर्जे शालांत शालांत ॥ সবলের অভ্যাচার, অবল উপর। मिर्वाद्वित् इम रहि, नियुष्ठ ७९भव ॥ রাথেন বেতন নিয়া, সেনা দেনাপতি। माधात्रन छेर्नकारत. तनन वर्षे मंडि ॥ সুবিচার বিতরণ, করিবার তরে। तारथम निर्णात्रभिकि, अकि मगानदत । लिए मम लन् बटि. अ मकत क्रांता মনে প্ৰলাভ কিন্তু, অভিপ্ৰায় টাঁর 🛭 প্ৰ-আশা কুশা নয়, কাইট্রো অন্তরে। ধন-আশা আছে তায়, যে কর্মা যে করে॥ অধ্যাপক করে ছাত্তে, বিদ্যা বিভরণ। হনলাভ-আশা তার, প্রধান কারণ । স্থাকার গড়ে ছার, ছোয়ে সম্ভন। मानितकता कटत मीटत, उतनी जालम ॥ कूमारत अञ्चल करत, माणित रामन। বিবিধ প্রক্রিমা গড়ে, অতি হুশোভন। চিত্তকর চিত্র করে, পট কত রূপ। দেখিতে সুদার হাতি, ভাব অপরূপ ॥-राजीकत राजी करत. कतिहा को नम । ' ट्रिंटि छार्श्टरात मन, क्रांटन कड कल है.

(वादयम्मूम्य ।

जियक द्वाज निश्चा, मामा द्वांश मादन। कू त्त्रा गमन करत, द्वांतित्र खांबारन ॥ কথক কহিয়া কথা, হাসায় কাঁৰায়। করিতে ঠাকুর-দেবা, মিতা দিজ যায়। নানা ক্ষা সহিঞ্জা, করি বারো মাল। আণা-সহ সামা সব, যত্ত্বে করে ছাস। ल्मनानि-महिल काहां. तमा गम्तर। নাহনে সমরে থার, তাজি প্রাণ্ডির। যাত্রাকর যাত্রা করে, দাভে কত সভ। হছ মেথে নামা চঙে, করে কত হয় 🛊 वामत विलाल महत, फूटन উट्टो ब्रांटण । ইচ্ছায় বানর সাজে, অতি অনুরাণে॥ জলে জেলে, জান কেনে, মান্ত ধরে কভ। नामि नरन निरंत्र करत, श्रेष्ठ शंकी इन्।। अश्री शांशाता (मर्थ, अर्दत अर्दत । भारे अत्मा श्रेट्स मिटल, ऋटल श्रीहरूत ॥ কেই করে অপরের, দাসত্ব স্বীকার। তিরকার প্রহারে না, মুথ ফোটে ভার । ে বোধাবোদ নাহি পাকে, যান অপ্যান। আদেশে বধিতে ধার, অপরের প্রাণ # महांगटत " महांगर " महा गुटश तटल। त्व शर्थ हमात्र श्रंजू, त्मरे श्रंथ हरन । **এই क्रांग** जिट्न जिट्न, मानदनिष्ठ । সকলেই দিজ নিজ কর্মে রভ রয় 🕯

क्विन शरनत खेरत, मराहे राक्न। यंश्रम या करत जात, धन-क्यांना मूल ॥ गश्माद्य शाकित्छ लात्न, शम श्राह्माकम ! थन यात्र कारह छोत्र, मकल जीदम ॥ धन यात्रं मारे जात, मर न्नाकात। ্ধনহীন যেবা ভার, গাছতলা সার। লোকালরে কেবা করে, সমাদর ভার। ভেকে না সুধায় ভারে, বিত্র আপনার # धनशैन दशरन भरक, माना खाना घटहे। रवित्र दक्षि करम, मार्थि थारक घटने # भनी यांहा जाहारमज, सूरश्रह मश्माह। গনে জালা নিয়ত, অংশন উপকার। বিনা ধনে কোন কার্য্য, না হয় সাধন। - তাই মনে সকলের, এত আকিঞ্চন॥ लंदन शरन रनिब आमि, शरमत श्रीतन। थरन जुल्ह करत दर, दन देकरन मासर ? ॥ সংসারে প্রধান ধন, জেনেছি বিশ্বর। थम-मह आति कंदिरां, फुशना ना एश ॥

विमारिक मांशामा खान, ना एस खाराह । जमांशा मांशन एस, श्रीकार विमारित ॥ विमार्ग राज लांच एस, जालोकिक खान । कि क्षेत्र जांच स्त्रहास ॥

विमेर्गारे महारे कर्रत, मवात कन्यांन । कि धन अयस आरह, नाहि करत् मान ?॥ अरमरन विरम्भ विमा, वोड़ीय मन्योन। मटत करत विद्यारमत, श्रुर्गंत वांशीम ध विशानटा करत विमान, स्युक्ति श्रीमान। मिटक ताका विदारमञ्ज, वांदका दिन कांग । इंट्राटल भेतकाटल, विभागे कटड हिए। विमा-विशीरनव मनो, घटने विभेती । विजरान धन जन्म, कूडाईश योग । विकत्रां विका जन्म, आहा हि शांत म जक्दहरां धरन करत, अनारम इतन । विमा-अन इरह टाईत, कि आहि अमन?॥ হতএব বিদ্যা বড়, পরার ভিতর। मकरलंड ७ जकती, विष्यां भित्रस्त ॥ বিদ্যার নিকটে আহা, ধন কোন ছার। विमा-भेनाग्छ धन, इस अभिवात ॥ हेक्हां-वर्तमं धरन विमानं, करत आकर्षन । जन्भा ८ रहारत धन, द्वा प्रतन्त ॥ অতএব বিদ্যা-হতে, ধন বড় নয়। गर्समाउ मर्स्सठीहि, विद्वादनत करूना

जा मह जो मह किया, जीविटजी प्रता। धन-कोट्ट विना। गज़, मह कोम क्रांस

थन-जरूकात विना, विमा। (गर्टेन करें श विमारिक विनिद्या विष्. खास किन रहे ? ॥ विमा इह निज्ञ , श्रमंत सन (कर्ना ! (मर्थ शंरम के कथा, श्रीकांत करत एक ना? म कहेश भटनत कांगी, विका कांग स्टंत। আশা পূর্ণ তরে আহা, থাকে নোড় করে। আপনার জোতিঃ আর, না হয় প্রফাশ। भटनत क्षेत्रोम (शटक, मना किलाय ॥ বিদ্যার গোরব নাই, ধরায় এথন। ধনের গুণের গীত, গায় সর্ফা জন ॥ क्वित्व कठेरानन, विमां काश थादक?। এ কথা বলিয়া জার, জানাইব কাকে?। धनहीन इहेरल. दिश्वीन ध्वीकत। विमा आट्ड दोरल फ्रांटन, त्क कटन समित्र में (शर्यात्क विमाति घर्मा, वस् अकृतेति । বাছারে লিখেছে মাত্র, সন্দেহ কি তার ।। ভাহাদের মতে মত, দিতে পারি কই?। কি ছইবে পোড়ে আর, নেই সব বই ?॥ ধনিদের প্রান্ধর্ভাব, সহিতে না পেরে। কেরে নর্মে বাখা পেতর; পোডে গিয়ে কেরে । প্রতোধের ভবে মাত্র, করিয়া কম্পনা। विकारिक वोष्ट्रिंग मिक्षा, क्लिस्टिक त्रवना ॥ विवादन करत्रद्र गांज, धार्मश्ला विकास। काराटक दक्राटम मम, जूनिटर कामात?।

(वादधम्मृत्र ।

निज गूरथ निज छन, कतिरल दर्गन। সে কথা প্রতায় যায়, কে আছে এমন ? * ছোট বড সকলে, ধনের গুণ গায়। ধনের প্রশংসা সদা, শুনি পায় পাঁচ। मकल त्नार्यत त्नाची, धनी यनि इत। তাহার দোষের কথা, কেবা কোথা কষ?॥ অভ্যাব থ্ন হয়, সংসারের সার। प्रस्ति श्रीत विष्कृ, मञ्जूम मरोत ॥ গনিলোক জানে ভাল, গনের কি গুণ। विमार्शक जारम त्यत्री, विमार्श निश्री ! নিত্রে আদি ধনে আর, বিদ্যায় বঞ্চিত। विरागना-मंकि नाई, जागारक मंकिक ॥ তবে আমি কি বুলিয়া বিদ্যা আর ধনে। ছোট বভ করিতেছি, আপ্দার মনে?। কি ছোট কি বড় কিসে করিব নির্ণয়। যক ভাবি ভত হয়, সংশয় উদয় 🛚 কুপে থেকে বড় বড, সাগরের মীর। ছির কে করিতে পারে, কতই গভীর?॥ कूमूनिनी, कगनिनी, कछ मधु शरद । (ভक कि विनिद्ध शारत, द्वितक मरतावरत ? । এইরপ হত তর্ক, করি বার বার। তত ভ্রবে পূর্ণ হয়, মানস আমার u लेक्टि लेक्टि शहर, निक्रा कांकर्रन। अट्डिन इहेनाम, मूनि छू नरान ॥

br :

ছুমাইল দেখিলাম, অভ্ত অপন। যাহাতে আমার হোলো, সংশয় ভঞ্জন । खशु प्रतिथ (वाद-हेम्मु, इहेन विकास) বোরতম ভ্রমতমঃ, পাইল বিদাশ ॥ হার কি নেখিব আছা! স্বর্গন ভেন্ন ।। आह कि Coun धूर, धूर्मात कथन !!! বর্নিতে সে ছবি, আমি করিতেভি ভয়। পাছে পরিহাস করে, কুলোকনিচয়। ব্যঞ্চলে কুজনেরা, কুকথা ভায়ক। দ্বেভাবে যত পারে, সকলে হাসুক্ या भीटन मिनना कति, डेल्मार मा छक्। অবহেলা করি কাছে আব না আছুৰ। তথাপি গাঁথিয়া আমি, কবিতার হার। न्त्रभर्मय विवत्रनं, कतिव श्रीहात ॥ अभिता ऐरमांर गर्मा, त्मन अमिरांत। **डाहाट** गरमा सार्ए, मारम जामां । মৃত কবি গুরুপদে, কোটি ন্যস্কার। क्वन अतमा माज, श्रमाम **डाँ**रात । করিয়া গেভেন কিবা, আসক্ষের জাক্। এক জন বিনা সব, হ ুয়াছে ফাঁড়। পত্ৰ গিয়াছে চুঁছে, আছে মাত্ৰ পাঁক। कारकत वनत्म वांटक, टिस् टिसि में का ভাঁহার আসমে বলে, সাধ্য হেন কার। क्रामाटक कॅर्निटक शीटत, टक्समें दक क्रांत है।

शिरकत गथुत हार अस्तरह एवं अने। তাতে कि नोवित्व कान्।कारकानिक्यम ?। निटल व्यामि कवि मरे, निजात अब्दोन ॥ কবিতা লিখিয়া নাশি, কবিতার দান। यामात मीतम वाद्या. क्विण-कामिमी। वित्रम-वनना इन, निवम-यायिनी ॥ त्यो डिडम अशंदत्र , टस्ट्रफ निया भन्। তাঁহাকে করিয়া খোঁড়া, ঘটাই বিপাদ ॥ অলঙার নিতে গেলে, একে আর হয়। 'আগেতে যা ছিল তার, কিছুই না রয়॥ मध मम खनशीन, हुछि बांद्र नाई। কি লিখিতে কি লিখিব, ভাবিতেছি তাই। যা হয় তা হবে পারে, কি করিব ভেবে। একবার দেখা যাকু আদরেতে নেবে ॥ এক এক বার হয়, ভারের উদয়। काल मारे किएत शकि, यम क्या मत । कर भी जल्ला करें, भी के भी शिष्ट्रे। थमकिहा कांदना-भवारेत विहा अहै। अन्दर्शाश-शंतरण, त्राट्स जनत्नत्व। मार्टम कृतिश छत्र, माभिनाम अटम ॥ यथम आंगदत स्मर्तन, तक वक् जन। पूरित्क शास्त्रम माहे, त्योजारमत मन म তথৰ কোথার লাগি, নামি কুত্র-প্রাণী। শ্ৰোতারা কি ভলিবেন, শুনি মম বানী ? ॥

30

वा हक् कथान ट्रेटक, जाविहां नेश्टर । ब्रथ्न-कथा गास्त कवि, गडन जलट ॥ ध्या नाथा ख्रथ्न-इति, कवित वर्गम । कक्र भाविकत्वन, कक्रम आदन ॥

্যে রুমণীয় স্বপ্ন দর্শন করিয়াছি তাহার স্ব-ৰূপ বৰ্ণনা করা আমার পক্ষে অভি সহজ वााशांत नरहा (वला आत पूरे अहरतत मगत আমি ভোজন করিয়া বাটীছটতে বহির্গত হই-লাম। কোথার যাইব তাহার কিছুই নিজ-প্ৰ নাই। কেবল অন্যমনক হইয়া গমন করিতে লাগিলাম। আমি একেশ্বর, আ मात्र मगण्डियासाद्ध (करुष्टे नारे। विषयम কেবল একমাত্র অনশ্বর, আর বিশ্বস্থিত দমস্তই নখর, এই বিষয় ভাবনা করিতে করিতে ক্রমে লোকালয় পরিভ্যাগ করিয়া বছ দূরে গমন করিয়া পরিশেষে এক নিবিড় গহনে উপস্থিত হইলাম। ঈশ্ব-চিত্তায় আমার মন এতা-हुल निविधे दहेबाहिल, त्य अमन विकन वटन ≱বিক হইয়াছি বলিয়া কণ্মাত উদিয়চিত্ত हिरेलाम मा। इक्टलगी नवलझविछ इरेगा

मन्द्र मन्द्र मंत्रीतर्ग-महकाटत (मानात्रमान इक्-ाह, जमृत्ये त्य कि शर्याच बाद्याम हहेन, ভাহাবলা যায় না। যত দুরে গমন করি, তত্ট যেন কাননের শোভার উন্নতি হইতে वाशिन। करम (वना ख्राह्म इडेन। यनि अ অটবীর বিটপী-সমূহের পতাচ্ছাদনে দিনমণির यूथावत्नाकन कतिरा भाति नाहे, ज्याभि क-মশঃ আলোর হাসতা হওয়াতে অনুমান করি-লাম, দিবাবদান হইয়াছে এবং সহস্রকর দিন-কর অন্তভূধরাবলম্বী হইবার আর অধিক বিলম্ব नाई। এই कथ छावना कति एउई घात अस কার উপস্থিত হইল, একেবারে দৃষ্টিপথ রুদ্ধ **इ**हेब्रा গেল। তথন মনে মনে ভাবিতে लाशिनाम। हाता कि कतिनाम, धका धका-नत्न कि निमिल ममागठ व्हेलाम ? এथातन वात्रिवात कान. श्रद्धां कर हिल ना। धरेवादा वृक्षि आन शहारेनाम। वित्वहना ना कतिया **५** तर भूटर्य भावधान ना इड़ेया क्या क्रिलाड़े এই ৰূপ ঘটিয়া থাকে। আমি এতকণ কি হততৃদ্ধি হইরাছিলাম ? আলোর আলোর

্**ভালয় ভালয় কেন স্থানরে প্রভ্যাগমন** করি-লাম না ?।

> किरमह कांत्रल, अलग अ राम, এ মতি হইল কেন ?। शिविहा मा राव, भवान होतार. वन् ७व रश रहत ॥ जागिशांटक मिना, मा लीकांटन निना, উপায় করিব কিবা ?। কার কাছে যাই, আতা কেহ নাই, भात कि दर्शतर निया ?a ভযে কলেবর, কাঁপে থরু থারু, कृश् कृत् करत तुक। हरत मां कि शंत. दशारमां कि दिशंत, नूथ नाई अव हेक् ॥ একি যোর দান, হোলো হায় হায়, माना (कट्डे जन योगा। अ आह तक्यन, थेविंट नहन, काहा हरेगांम काना ह था कि उल्लेम, भूमत्रोगमन, अद्भी कृतिजाम वनि। खटर कि अरेन. उंशरन अमन, नडीइ डांबना-मनी? ॥

কি করিব কিছুই ত্তির করিতে পারিলাম না। একবার তরুমূলে উপবেশন করিয়া গালে इंड क्षनानभूर्यक छ/विष्ठ थाकि, भुनर्यात প্রাণনাশ-আশক্ষায় অতীব ব্যাকুল হইয়া দ-**धाशमान हरे। वङ्कगाविध अहेबल क**हिटङ করিতে অনস্তর বিবেচনা করিলাম, যথম জী-বন সংশয় হইয়াছে তথন এক স্থানে থাকিলেই वा कि इडेटव ! धीटत धीटत छाना छटत शमन করা উচিত হইতেছে। এ কাননে মহর্ষি-গণের আশ্রম থাকিতে পারে, বেচেডু কীছাক: তপদ্যা করিবার নিমিত্ত জনপুনা কান্ত্র অং-**স্থিতি** করিয়া থাকেন।ঈশ্বরায়ুকস্পয়ে এবং ভাগাক্রমে যদি কোন তাপদের আশ্রমে উপ-ষ্ঠিত হইতে পারি, তবে অনায়াদেই জীবন রক্ষার উপায় হইতে পারিবে। এখানে থা-किया किवल तामन क्तिएन है वा कि इहेरव है ''যতক্ষণ স্থাস ততক্ষণ আশ'' অতএব বি-পদগ্রস্ত হুইলে একেবারে হুডাল হুওয়া কাপুর-ষের কর্মা মাতা।

मत्न मत्न এই तथ बात्कथ कतिया महर्षित

व्याध्यम व्ययुमकारन यञ्जनील रुटेशा धीरत शीरत অমণ করিতে লাগিলাম। কোনু দিকে গমন করিতেছি কিছুই নির্ণয় করিতে পারিলাম না। श्रान्म खटन नक्त जन खनीत मोखि । पृष्टिशाहर **इडेलं मा. शु**ख्तार असकारत अस्तत माहि পাদ-নিক্ষেপ করিতে বাধ্য হইলাম। কিয়দ্র গমন করিলে পর. অকমাৎ একটা সালে দুটিপথে ণতিত হ্ইল। দুর হইতে সেই जात्वा बद्धांकन क्रिया महभा किश्चि मा-হ্মও জিখাল। মনে করিলাম, কোন মহ-ধির আশ্রমের সমীপাগত হইয়াচি, অত্তর এখন প্রাণ রক্ষা ইইলেও হটতে পারিবে, আত কোন ভয় নাই। যত সেই সংলোর দ্মীপত্ত হইতে লাগিলাম, তত্ই আফ্রানে পরিপূণ इंडेलांन

> সমীপেতে সংবাৰর, করি দরশন। তৃষাতৃত নর হয়, প্রফুল্ল থেমন। চাতকেরা নাভোদেশে, হেরি নব খন। ধে প্রকার কোরে থাকে, প্রদক্তিনন।

(वाद्यनमृत्र ।

লানমুখী সরোজিনী, হেরিলে তপন। পুলকে ধেমন তার, প্রফুল্ল বদন।। নেইরূপ আলো দেখি, আমার মানস। ভুতিল বিরস ভাব, হইল সরস॥

ক্রমে সমুদায় বন আলোকে পরিপুর্ণ দে-थिलाम । द्वाय इहेल त्यन विवाकत निमान निमाहतीतक मश्हात कतिया छेमस्तितिए छेल-বেশনপূর্ব্যক পুনর্বার দিবা প্রকাশ করিল। अरक्रारत मभाक्थकारत जाच रहेलाम. बुक्रमी बलिया किष्ट्रे (बाध विष्ट्रे ना। मृह হটতে অনুসান করিয়াছিলাস, একটী জ্যোতি র্মায় দীপ জলিতেছে। নিকটে গমন করিঃ। **प्रिलाम, (कान मील नाइ, (क्रान मिव(म**) নাার সমুদার আলোকসয় হইয়াছে: এব-প্রকার অলৌকিক দীপ্তি অবলোকন করিছা অতিশয় বিসায়াপায় হইলাম, কারণ বাতাত कान कार्यात উৎপত্তি मसुद्य ना, किन्नु वड অনুসন্ধান করিয়া এই অদু ত ব্যাপারের বিশেষ কারণ বুঝিতে পারিলাম না। তাহাতে মনে।-ম থ্যে পুনর্বার আশস্কা জন্মাইতে লাগিল।

বুলিতে না পেরে আমি, আরোর কারণ।
করিতে না পারি ভয়ে, চরণ চালন।।
দিন দেখিতেরি কিন্তু, দিনকর নাই।
এমন হইল কেন, তারিয়া না পাই।।
পত্তে ইতন্ততঃ পুনঃ, করি বিচরণ।
ক্ষকত্মাধ দেখি এক, অন্তুত ভবন।।

শেই ভবন অবলোকন করিয়া যে কি প-র্ঘাদ বিম্মাণ্য হইলাম, তাহা কোনমতে বাক্ত করা যায় না তাহার কত দার গণনা ক-রিজে নিতান অক্ষম হল্লাম । তাহার চারি-দিকে পরিভ্রমণ করিছে মান্দ করিয়া কোন্সতে क्रडकार्या ५६८७ भारिताय मा. स्वरहरू जाहा বছদুর বিস্তারিত। প্রচোক দ্বার দিয়া **আলো** दिस्थित व्हेट छ। एक ना यथन स्य मिर्क গমন করি দেই দিকই কেবল কিরণমালায় विञ्चिष्ठ. (तथा यांत्र, जन्तकारतत तम गाँवह নাই। যখন যে ভারের সমীপাগত হই, তখন সেই ভারদেশে একটা স্ত্রীলোককে দেখিতে পাই। তাহাতে বোধ হইল এই স্ত্রীলেকৈরা ছাররক্ষাকারিণী হইবেন। তাঁহারদের অন্তু-

त्वाद्यमृत्रः। 🔆 🦠 ১৭

মতি ব্যতীত রম্য হর্মে প্রবেশ করিবার অন্য কোন উপায় নাই, কিন্তু কাহারো সহিত আ-লাপ নাই, সুতরাং কোন কথা জিজাদা করিতে प्रदेश माहम इडेल ना। छात्रतकाकारिनी-গাণের আকুতি প্রকৃতি এক্রপ ন্তে এবং সক-(नत मयान व्यवसाध नय, क्षांचायः क्षांचामान उन्नेता (कह सानमूथी क्**रे**शा ना**ल** क्छ मिशः কারনা করিতেছেন। কেহ্ মলিন বসন পবি-ধান করিয়া রোদন কবিভেছেন : কেই খতারু ব্লমা, প্রায় চলৎশক্তি রহিতা, ইইয়াছেন তথাপি कैं। हात कलनावना (मनीलामांन आह्य अवः কে(ন অনস্কারেরও অভাব নাই। কেছ প্র-ফুল বদনে নৃত্য করিতেছেন এবং স্থমপুর ভান ধরিয়া গান করিতেছেন। কেহু পুরাভন বস্ত্র পরিত্যাগ করিয়া মুতন বস্ত্র পরিতেছেন। (क्र पापनारक नाना अनदाति अनक्षा ক্রিভেছেন: খনক্র আমি প্রানাদে; মধে প্রবেশাকাঞ্জা হটয়া কেনে কথা জিজাদা क्रिटिंग (कर्डे डेंख्ड श्रामान क्रांत्रन ना, (क्रांग व्यवाक रहेशा अक मुटके नितीकान कतिए । था-

কেন। কেছ কেছ আমার ভাব-ভঙ্গিতে আমার অভিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া উত্তর প্রলান করেন, কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই যে আমি তাঁহাদের কথা হুলয়কম কুরিতে পারি না। তাঁহারা আমার কথা বুঝিতে পারি না, আমিও তাঁহাদের কথা বুঝিতে পারি না, হুতরাং কাছারও সহিত কথোপকথন করিতে সক্ষম হইলাম না। তাহাতে মনে মনে বে কোভ জামিল ভাছা কোনমতে প্রকাশ করিবার নহে।

এইৰপ দ্বারে দ্বারে দ্বারিপালিনী কামিনীগণকৈ জিজাদা করিয়া পরিজ্ঞান করিতে লানিলান। কিন্তু কোথাও মনক্ষামনা নিদ্ধি হইল
না। ভদনন্তর এক স্বারপালিনীর সমীপস্ত
ইয়া কিঞ্জিৎ ভরদা পাইলাম। ভাঁহার
আরুতি প্রকৃতি দৃটি করিয়া বোধ হইল ঘেন
ভাঁহার দহিত বছদিন সহবাদ ও কথোপকথন
করিয়াছি। ভাঁহার প্রসাদে নানা বিষয়ে নানা
উপদেশ পাইয়াছি, তিনি আমার জীবিকা
নির্কাহের উপায় করিয়া দিয়াছেন। ভাঁহার

সহ্বাদে থাকাতে এমন সাহ্য রদ্ধি চইয়াছে (य. यथा ट्रेक्टा उथा याटेर्ड नमर्थ इनेशाहिः) গ্র্মান্ত আলাপ আছে এবং যিনি আ-माद मह्मालकाविधी, जाँशाव निकटि शमन क्विट्ड चामका दक्त इटेंद्र ? मगीलवर्जी হইয়া তাঁহাকে প্রণাম করিলে পর তিনি ৩২-क्रनाष्ट्र जागारक हिनिएड शाहिरलम, धवर आ-মার প্রতি পুর্বনিপ স্নেগ্ প্রদর্শন করিতে আ-नाथा कवित्वन ना वर्षे, किछ जरकातश्रुर्खक বহু বাক্যব্যয় করিতে আরম্ভ করিলেন।

তাহাতে তাঁহাকে কোনমিগুঢ়কথা জিজ্ঞান: করিতে ইচ্ছা হইল না, সুতরং অমুসতি লইয়া अनिज्ञास विमात इड्लाम। शहत शुनर्दात পরিভ্রমণ করিতে করিতে অনেক দ্বার উপ-ক্রম করিয়া পাদকেপ করিতে লাগিলাম, **ইতোমধ্যে এক দারপালিনী দূর হইতে আ**-गाँक व्यवत्वाकन कतिशा सुप्रभुत अति महर्:-ধন-পূর্ব্বক ড।কিতে অ'রম্ভ করিলেন। ভঁ:গ্র শ্রীচরণ দর্শন করিয়া যে প্রকার সম্ভূষ্ট হটল।ম তাহা বাক্পথাতীত। পরে তাঁহার নিকটে গমন করিয়া ভূমিষ্ঠ চইয়া যেমন প্রণাম করিলাম, তিনি তৎক্ষণাৎ আমাকে মাতৃ:রহভাবে কোলে বসাইয়া আমার বদন চূমন করিতে করিতে বলিতে লাগিনেন।

কোলে আর, কোলে আয়, জরে বাছাধন।। कि कोइएन, अकोइएन, क्तिमु जन्म ? ॥ **्रात्त करियाहि श्रामि, नानन शानन** । কৰিয়াছি কত ভোত, কলাণে সাধন # यथम क्लि अ मिन्न, फूटी माई ताल। কত দ্রেছ কবিষাটি। ভোৱে দিয়ে কেলে। স্থাশিকা নিয়াছি কল, কথাৰ কথায়। তোর কি পড়ে না মনে, আর কি আসায় ? ॥ আমি ভোৱে শিখায়েতি, কাছারে কৈ বলে। মুখ জি দিয়াছি তোরে, বিবিধ কৌশলে । इ: थिनी दलियां जाति, माना जात नहे। মপ্রীগণের কভ, বাক্য-জালা সই ॥ मातमा क्रायां क्रिया क्रिया मूर्य स्त्र। काराके जनका करत, है कि शारन मह १॥ উদর পালনে সাবে, রত ক্রমাগত। সপত্রীর জনুগত, আহে জবিরত।

কীহার এই সমস্ত আন্দেপেংকি এব করিয়া জিডাসা করিলাম।

কে হও আগনি, বল গে৷ জমনি ! क्ष तमा उनन कांत्र थ। किएमर कारण, क्रिक् शंडम, यम अिंक यमिनार । ॥ पारत शास मोती. यूनिवास माहि, तम डोशाश (क इस। अरु सुराष्ट्रे छोत्। एएरक व्य ग्रशन, भाग संदूर महत हम। পাংৰ ভাৰশোষে, এক দ্বাৰে এনে, कहेबाय देशलंक। म पारशामिनी, अधियक्षिणी, ज्यितन रायाविक ॥ সাহমে তথন, কংগাপ্রথম. করিলাদ মহ ভারে। इटेश विषाय. अलाम खुताय. চেরি তাঁর অহস্কার॥

দ্বাররক্ষাকারিণী আমার ব্যক্তা শ্বনিয়া তৎ ক্ষণাৎ সাদ্ধের ইত্তর প্রদান করিলেন।

कत श्रीनिधान, राष्ट्रा, रुद्ध श्रीनिधान । সতে জানে বন্ধ ভাষা, মন জভিনান ।। अहे दौरव नाम आधि, कति हिद्दिन । न मार्च धररर्भ माना, कामान कतीन। कारत घारण दर्शतहांक, त्य नव का यिनी। अरु ५० अस् डांडा, बाटनर रिकरी ॥ লাঠিন, খিনিজ, ভি.মা, নানা ভাষা খার নিশত করেন রক্ষা, হাছিলে যে ছার।। (माथमा भावित्व अक, धनीनां तमनी । ভিন্নই সংস্কৃত ভাষা, আমার জনলা । আনেক বয়স ভারে, প্রিক্রান্তে কেশ। চলিবাদ শক্তি আয়, হইয়াছে লেখ।। ধ্বিত আমাৰ প্ৰতি, অনুনকের কেন্ত সময়ে সময়ে পার্চ, বাত মত ব্রেশ।। কাঁছার তময়া যাই, থেঁচে আভি ভাই। মত্র আমার আর, রক্ষা ছিল মাই।। हेरहाकी, शांतमा जामा, मश्की बामाता মমে পিরে করিয়াছে, কত অভ্যাচার।। युष्ठाहित अत्करादत, मभ अधिकांत । অনিবার চেতা ছিল, পারস্য ভাষার ॥ विवारमञ्जल कर्य आणि, कांचा ना गांहे। থাকিয়া আপন স্থানে, সময় কাটাই।। मत्रल खडार मम्, मत्रल खड़ीर। দিবস্থানিনী আমি. ধবি শান্ত ভাব।।

তথাপি পার্ম্য ভাষা, সৃতিনী পাপিনী। मर्खनां नी (পांडागुर्थी, तम कालमा शिनी॥ আশার নিক্টে এসে, করি মহাবল। জালাত্ৰ করেছিল, আমায় সেবল ৷ कर्ण कर्ण मध करक, क्रार्ड शकांत । क्शरना तरशरक शिका, कोळार कोकार त কত দাগ গায়ে আছে, মিলাবার মহ। कि एक एम भव कथा, विवाद अभग्रा। পেষেত্রে সে সাঁটাখাকী, নিজ কর্ম-ফল। विकल कर्मट्र अत्त, भक्त (कोश्ला। भागि कुलरालां माही, जनल महला। कारताह का (इ.स.). भवना धारना ॥ एलात सिक्ट केला, बाटन कराक्या. तनथ (म ध्यात इन, विस्य किन काम ॥ লপালুট ইংরালি ভাগে, ক্রিনায় থলা। ভাগার বিভাব কথা, লাগি যায় বলা 🛚 পালেনা ভাষায় মেই, করিষা নিদায়। এখন সে ভেলভাবে, আমাল জ্বাল ॥ व्यवलां द्रिशा करत, क्षावल श्रद्धात । আমার উপর ভার, বত অভা। হার । क्शन मां कारन तार्ग, मुश्कीर जाना। পরাতলে ফুলী মাত্র, সেই কুলবালা। করিয়াছ যার সহ, কথোপক্রন। ত্ৰিস্তে যে তোমারে, করিয়া যতন #

দেশিয়া এসেছ তুমি, যার অহকার। तिहेट के हेर तो की खाया, अ**ल** को खायात ॥ फोर फरव किंट्रिय मिति, बाक्ला मनाहै। লোভে অনুগত ভার, হয়েছে সৰাই ॥ তাই তার বাডিয়াছে, আরো অহঙ্কার। দেখিয়া এমেহ তৃনি, কি কহিব আর ॥ ष्ट्रः थिनी विनिधा दिन, आभाग ना भारत। विनिया ना फारन आहे. जानिया ना जारन म स्वरहरू रहामात्र आमि. कहिताहि कारन। জ্বতাক তাপিত প্রাণ, ভাক মা মা থেলে॥ কামার বেমনকশা, ছেরিলে নয়নে। প্রকাশ করিয়া সব, বোলো জনে জনে। এথনো অনেকে বাহা, আংছে মম পকে। व्यत्नरुष्टे कर्तिर्ट्टिङ, यम गान र एक ॥ मश्री-अधिनी (यन, इहेर उना इश्: তা হলে এখন বাঁচি, কুল মান রয়॥ সরস্থতা নাম তাঁর, এ ভবন বাঁর। अधिक मकत्ल हरू. अवीमी डाइनत ॥ অতি গুণবতা সতা, অমৃতভাবিদী P অপরুপ রূপ ভারে, মানস-মোহিনী। छानमा, निवमा, जिनि, खविसा-नामिनी। करुछ-वर्मना मना, कनानिकाहिनी ॥ क्तां मिनी विमि काँत, तालत जातना। कांत कारण कारलांगग्र. स्ट्युट्स कारणा ॥

किंग त्याल, बरमरिनाल, त्याजिः ठाँव किंग। अथारन और जम माई. कि निमा कि निना ह হারে দ্বারে থাকি কাছা, আমরা সবাই : অবিরত তাঁহার, গুণের গান গাই # ভব্তিভাবে যেবা প্রত্নে, তার জীচরণ। मनया श्रेश जिनि, जारत कारत नन । कामारिमः महकात, दिनां कान । করিতে না পাতঃ ভার, নিকটে গ্রাম ॥ জোগাও ভো নাই, আর এমন ভবন। কত দুর বিভারিত, নাই নিরপা। । थगन यह जाएक, देशोह जिलाह : কাৰ সাধা সমুদায়, দল্পান কৰে"॥ गटत भारत कर आया, मध्याने माहे फाता অযুত বাপার সব, অমৃত ব্যাপার। ममुन्यु दम्शीर, आदनीय न्य। স্থিত কে কণিতে পাতে, কোণার কি রয়॥ त्य चरित्र गोशाह है ऋहे, कहिला शहरण। ভ্রমিয়া অনেকে আয়, করিয়াছে শেষ। নিদ্রাহার পরিহার, করি অনিবার। करमरक मृतिमा भारह, यथा मात्रा योह । ত্রিকার ছরেছে কেহ, ঘুরিয়া কেবল। ভথাপিও পারে নাই, দেখিতে সকল্য बाज अब स्मिशी, (मिंग्टिंज शिंदर मद। इस मि. इटव मां, महि, अमन मामव ॥

कि कर करमात कथां, राष्ट्र राष्ट्र शीत। হারি মানি একেলারে, হয়েতে অধীর । পরিশ্রম শিরত বে. করেছে স্থীকার। নেও পেয়ে যায় নাই, কোননতে পার । গ্লেসের বশ হয়, কোন কোন জন। इंड्रिट्र अरग करत. श्रेमद्राणम्य ॥ নেহ কেহ প্রবেশিয়া, দ্বারে এক বার : শন-ভয়ে ফিরে গেছে, ভারিয়া অপার। কেই প্রবেশিরা কোরে এ মর ও মর। ভাব বুৰো ভাষে ভাষে, হাখেছে অন্তর ধ কেই কেই প্রমন্তরে, করি প্রাক্ষ। गुरुट्ड व्यानक क्षारित, इटेश महरू॥ क्रियाट अंटकरांटर, महीत श्रेक । হরিয়াতে কাল শুধু, করিয়া ভ্রমণ। তগাপি এ ভবদের, দীমা পাচ নাই। হায় হায়! আজীবন, দুৱেতে সৰাই। मधनश (निविद्युः, कृद्धं मा, अञ्चलाय। কোভ লাভ হ*ে মাত্ৰ, হইবে* হতাশ। কেরিয়া ভোষার ভাব, করি বিবেচনা। প্রবেশ করিতে তব, নিভান্ত বাসনা । काउजन गरम अम, त्मराहिशां शथ। যত পারি পুরাইব, তব মনোরঘ। কেনি পথ দিয়া যেতে হবে কোনু মরে। বাছাধন জোনায় দেখাৰ সমাদকে

ছেরিলে ভোমার মন, হইবে মোহিত। माक्षांथ कहिरव कड, लांकित महिज म তাঁহাদের ভাব-ভঞ্জি, করি বিসোকন। বুঝিতে পারিবে মনে, দীহারা কে হন ১ তীহার এ কথা শুলে, পেলেম সাহস। **চ**लिलांग जन्मांगल, श्रद्ध ठांत वन ॥ প্রথমেই এক নারী, করি দরশন। क्रांमल मंतीत छाँत, कमल-वनन h নিয়ত বকিছে, নাই সুখের কানাই। द्धारत थमकिस कामि, अमान माज़ाई । বুঝিতে না পারিলেম, তাঁহার কল। বিষয়- সনিলে মগ্র, ফলেম ভাষন 🛭 কার এক রম্পাকে, হেরি ভার প্র। প্রাতন কথা বলিতেতে, নিরন্তর ৮ मम, ममी, बङ्गांकत, कामम, ভূধत। था छ, इत, कमर्भन, खारतम, नगता এই সৰ পৃথিৰীয়, কোপায় কি রয়। বিস্তারি বলিছে কেহ, করিয়া নির্ণয় ॥ किरम किरा शिलांडरल, कि श्रुन जेलग्र। কেই দিতেছেন আহা, তার পরিচয় । कि अगरध कि त्रारिशत, रश ध्विकात। **क्रिक्टिंड मूट्य, विवदन छात्र ॥** क्ट्रकांम् अञ्चत्र, कि ज्ञर्भ कारहर। কি রূপ স্বভাব গরে, বলিভেছে সব 🛚

त्रह वा दिमांनशीरन, त्रदश डेक्सपूरच। গ্রহণতি নিরূপণ, করিতেছে সুখে। কেছ দানা ভৰ্ক, কহিতেছে উত্থাপন। কেছ কলিতেছে শুধু, দিক নিরূপণ । निर्वत कतिए कर, इमि-शतियां।। আকর্ষণ-শক্তি কেই, করিছে প্রমাণ ॥ কেই খড়ি পেতে কত, করিছে হিসাব। কেই বর্ণহার গেঁথে, প্রকাশিছে ভাব ॥ আনিতেতে সমাচার, কেই ভারে ভারে। অসাধ্য সাধিতে কেহ, ৰুদ্ধি-সহকাৰে h এক সের দিয়া কেছ, ভুলিভেছে মনে≉। क्यारन अपन इस, जीवि घटन गरन ॥ হেরিলাম এইরূপ, আঞ্চর্যা বিষয়। मति मति अ मन कि, विचारतत नह ? ॥ कादना दिकशो, खोभिकाम ननसार्व । ললনার দারা আর. কি লা হতে পারে ? এরূপ গুণের মারী, আরো কত আছে। হেতে পারিলাম কই. স্বাকার কাছে। मकरलय भी ८ छत्, गरन मरन (भरत । श्रेनरक श्रीजिक्रात्व, हिनिनाम (पर्वे । किছू मृत शिद्य शांत, हटन मां हत्र। जाल राह পড़िलाम, कतिहा नहन इ করিতেহিলাম গভি, যাঁহার সংহতি। विभि शिक्त यांत श्रीत, महा मम प्रकि।

[·] BERT CHAI

(सार्यक्षम् ।

মরনে হেরিয়া আহা, আনার এ গতি। एनिएंड क्रोमोर कोशो, श्लामन स गडी। अका इहेनांग जामि, गाफ दक्र नारे। ভাবিয়া আত্তল हहे, ठूल माहि शाहे॥ काराता मिर्ड मांडे, क्थन जानांश। मज्य असद्ध कति, अउरे विलाश ॥ कि कहित दर्शाया शोर, ब्रद्धकि दर्शायोग । छानिया नयन-छाल, कति होत होत । भारत भारत क्वल, व्यवाक् श्राह वीकि। विभटन अफ़िश्र आणि, विभटनहें जिनि । उथानि रहेन यम, क्यम क्यम। नम्रम यूनिया रहेलाम, घटाउन ॥ कड कन शद्य मम, ह्रांत्ना छात्मामम। मम्म मिनिया आद्या, श्टनम् म स्त । ट्रिनाम जांत बक, मांत्री जरूंशमा। नाहीकूरन क्रथवित, माई ठाँव मना ब সহিতে माँ পেরে তার রূপের কিরণ। मुक्तिनाम ভয়ে ভয়ে, আবার নয়ন ॥ ज्थम मन्त्रा इन, ट्रिट् विटमानिमी। करतन अञ्चलनान, अञ्चलकिनी ॥ কি ভয় কি ভয় আর, আমার তদঃ। ভয় পরিহর, হও এখন অভয়।

आमि नत्रक्छी अरे छवन कामाङ्गा जाशिव अमान दश्दत, पूर्णीक दर्जामात । व्यामात स्वमं अहे, व्याभात स्वत्म। मध्य विकिश देखि, कर महमान !! वांनीत मधूत बांनी, अनिश उथन। रिटलांकन कारिजांग, जाक जिन्हां ॥ কি কব মপের ছটা, অতি অপরপ। কে দেখেতে কোথা আতে, সে রূপ স্থান্ত ॥ गगरीन क्लांह गमी, स्रेटन छत्रा। वाका ज्यू तम पुरश्त, जुलमां मा क्या। त्यं उर्भारम विद्योगिको, त्यं छ-कटनवर्ता । गम्ह-कनानिकता, ज्ञाम बहिता। মনুর সেতার বীণা, পুস্তকগারিণী। श्चिष्ठे लेटन भागा ही, अग्रथ-शाहिली ॥ मत्य जारक क्षेत्र जांग, क्षेत्रिय जांगियी। त्रांशिलोता खांश किना, अम्खडांविली ! শত শত সংচরী, আছে সঙ্গে সংস্থ। विकार बहर करम भरत, सूर्यत खतर 🛊 किना वगश्कात मात्र अदमत भूवन। अ**ि मटनांध्तं मद, अमृ**ला द्र**ञन।** गनत्तरण आहि जांह मेखानंत होता । বিনয়ের চাঞ্চিক্ লোভে কোলে ভার। छेशरमम-मुकामाना, कर शान जाता। गनमा कतिता त्यव, कता बोहि योगः

(वार्थममूबक ।

শান্ত ভাব-কঠমালা, পান্ন কিবা শোভা। । विदरम्बा-माज्यह्, विवासत्यादको । ক্ষত্তি-মুকুট, মাথায় সুমোতিত। গুড়ভক্তি-চূড়া তার, কাহেছ বিরাজিত 🕯 चामीन डा-क्षीमानी, अडीव स्थकः । নিপুণতা-গুজিকানী অতি দীপ্তিকর। माकृ छिल-काश् वाला, जुरुकि द्वमन । পিতৃত্তকি-বোঁদাতেই, লোভিছে অবৰ ঃ क उञ्ज्ञा-कूमगुर्का, याख भरिनोहर । गुक्ति-मिं जि त्या ज करत, जोरबात छे थेत ॥ বুদ্ধি-কবরীতে বাঁধা, আঁচে জ্ঞান-ফুন্ন। ছুই কাণে ছুনিতেছে, অভিজান-ছুন। गिके जायो-मर्थ तिल्ला, मजानी-मनक। সত্যতার বাজু কিবা, মানসরঞ্জক । তালে ভালো শোভা পায় প্রশংসার চিপ্ माधूज-मिंबूद हान, खिलाज्ज मील । श्टर्भत्र कोविक शास्त्र, महा-श्री एवे कात्र। পরউপকার-টাড়, অভি চনৎকার গ धार्मिक छो-वांडे ही, त्करम त्मी हा कर । महत्र डो-महताना, त्यां है। करत कर ॥ भूठतिद्ध-ठोल्सोनाः न्याव-यूथकः। বিজ্ঞার জবদানা, দেখিতে শুন্র ৮ अदिशाम-अभिजात, नातिरकत-कृत। अनेटहत्र प्रमृष्य, स्त्रोक अजून ॥

112

सन्योहकणा-वाला, शहा हुई कहता। वक् छ- मंकित कदर्शटल, मरमांहर्त । कैंकिटिनटड भौतमर्नि डोत हत्त्व होत । ছিরপ্রতিক্ততা-গোট, কাছে আছে তার। शांदर शहां नित्रखन, व्यविदान-मल। পরস্থান কাজরতা-পাঁজর অমল # धीतर्छा-सक्ष्मं कांत्र, महादेशत असती। कियां ब्रमगीत आहा, मति मति मति ॥ गारम-हु है की, भना चु त्व त्था हा भाव। भौतदबद शिठवासी, मान-रथाता जात । এইরপ কত রপ; ভূষা অপরপ। मर्क शाह त्यां जा भार, कामहि कि क्रथ ! ছেরিয়া নিমিষহার। সম নেত্রময়। अटकवरित अवोक्, क्टनम दन नम्ह ॥ कुर्शाकती कुर्शा करि, रामम ज्यम। অতুলা অমূল্য, বাছা! আমার ভূষণ 🛭 অনুগত হয়ে যেবা, মম পূজা কুরে। बहे जब कृषा जांद्र, निर्दे ज्यानद्र ॥ দইতে এমৰ ভূষা, বাসনা বাহার! निवानिनि करत रमहे, व्यक्तना योगोत । खीटनाटकर अख्दर्भ, श्वर्य मा भटत । भूकट्य शिव्राल लांदक, छेशहांम कदत । खीरनारकत जुमा रहते, अमर ज्यन । खोटलांटकड़ा शरत बटडे, यथन उपन ह

त्वारथममृषय ।

मातीत जूरन राष्ट्रां, (यशांटन या माटज। मिहे मास्य थर्गाक चूर्वा, अ प्लटर विद्रांद्य । मातित जुवन गज, अ जुवन सरा। কনক হীরকে কিছু, নিৰ্শ্বিত না হয়। गहागृला दल जात, कि जारह अमन। ষাতে মম ভূষামূল্য, হয় নিরূপণ। शूक्रस आंशाह कृमा, कब्रिटन शहर। এক মুখে ভার রূপ, না হয় বর্ণন। পুরুষের যোগা বটে, মম অভরণ। **ভाल क्रांट्स (महे, ल्यारहरू (र अस** । मम चूनां, शरत रवतां, शांत्र रमहे यहां। निका कहा मृद्ध भोकु, मृद्य जोड़ वर्ग । এইরপ কভ ভূষা, আতে মন যরে। মত দান করি ভড়, বাড়ে করে করে। माती हरा हिन जानि, शूक्रवर किल। मम कृषा পেতে চাষ, सूरवान रव एकटल म আমার চরণে কাছা, লইলে শরণ। क्रमाशांटम खुट्ध कह, ममा इहल ॥ এত বলি বাগীশ্বরী, অভিশয় মেহে। मरक लट्ड एलिटलन, आर्थनात शार्ट । যেতে যেতে হেরি যত অদ্ত ন্যাপার। वर्गिट उप मद भना, शास्त्र वर्गशाह ॥ दिवीत महिल शिक्षां, दिनीत मन्तिरः। कतिलाम क्षार्यम्, मञ्दर धीरत धीरत ।

रिमित्सम् छन्दछी, सूत्रमा जामान । হেরি নব ভাব কত, আবির্ভাব গনে 🛭 সেবিতে জীপন তার, করিয়া কামনা। শদতলে বসিলাম করিতে, অর্চনা 🛚 ভার এক মারী আহা, এমন সময়। ভিপদীতা হইলেন, নেবীর আসয় 🛚 শত শত সহচরী, চামর ঢুলায়। **আহা किना नवां**टहांह, तला नाहि घांग़ । অতুল বিভব তাঁর, অতুল বিভব। मरण मरक अरला उँ।त, ठाँकी इस मव ॥ আসা শোঁটা কত মত নিশামের জাক। घड़ी बांदल, चन्हां वादल, वादल करन मांक म हान हेटक कड हानी, हानीभाक व्यटन। भामकी बसूक नरंग, जीत हूरफ रकरन ॥ কত মত জহরত, মুক্তা জোড়া জোড়া। हुनी गनि, छोका जात, सांहरतत ट्लांड़ा ह এইরূপ সঙ্গে তাঁর, কত আড়ধর। হেরিয়া আমার হয়, সভর অন্তর ॥ অরুগত কত লোক, সন্থে দাঁড়ায়। धक जारन जाकिरलहे, गुड जन शांत । यां उस्तां यिनी जिनि, कूत्रमनत्ना। कृत-करनदर्श उद्ग, कमन-आंगना । অনুভাবে বুঝি তিনি, স্বভাবে চঞ্চনা। अक ठीं सिंह मंतृ, यमन व्यंगी 🛊

পুৰা নাহি যায় তাঁর কত অলমার। स्वर्णंद्र गांक विम, करलेवत जात । जाशांट करनाइ रवन, मनि मुख्ते कन। নকু নাকু করিতেছে, গুড়ি নিরমল । डाँदत द्हित बांग्रस्वी, अिं गगांनदत । কালে বসালেন আশু, ধরি তার করে। दलिएलम वन त्वान्, अञ्च मर्याणात् ! কেমন আছেন সব, স্ব জন তোমার 🛭 तक मिवटमत लात, (मर्था उव मटम। कि कांतरन आंगाम, आंगांत मनरम ? भटत (मरी यम थानि, मृष्टिभांक कति। হেদে হেদে আমায়, বলেন শুভকরী। প্রনিধান কর বাহা, আমার বছনে। आगांत जीतनी हैनि, जात्न मर्ख जत्न । देशंद आंशांन नामी, ताळ हताएदा। धनां छाद नगरि थात्क, हैनि शल गतः ॥ विनाब नेवती रहे, चानि त त्यमन। धरमद केन्द्री कम, देनिए उपम । এ বনেও আছে নাছা, ভবন ই হার। ঐশর্যোর কথা আনি, কভ কব আর ঃ कर्गात्क लांदिक जानि, विमानं कृति मानः देनि । करून धन, करतन धनान ॥ चांमारक त्व करत भूका, विना शांत त्महे। है होटक या भूटक, खांत धनांकांव त्यहे।

**

এই বনে বাকি বাছা, আমরা ছু জন ; मानदात कडि कछ, कलानि माधन। व्यागादनेत व्यक्तितात, धता मगुमग्र। আমানের ছাড়া বাছা, কিছুই না হয় ৷ কেহ এঁৰ অনুগত, না চায় আমায়। क्ट में कंनुगंड, हैं होटक ना होता u কেছ কেছ আমাদের উভয়ের নয়। আমাদের অর্চনার, রত নাহি রয় 🛚 व्यागानिटश कांटगामटम, भूजा कटत बाता। আমাদের প্রিয়পাত, সদা হর তারা। बारता रखा बना किछू, अहारियो गई। आगात अञ्चल देनि, कांगि व त तक्। বড বলি মুম প্রতি, ভক্তি বড দুড় ॥ टेनवटघारण याहे जाबि, हे हात मनन। ইনিই আ'দেন হেখা, যথন তথন ! নিয়ত রাখেন ইনি, আমার সন্মান। मम भेदार में ना करवन, दश्कान ॥ যথন তথন ইনি, সাবিতে স্ব কাজ। लहेट कामांत युक्ति, ना करतन गांक श त्यारमण्ड इत्त्वारी, जामात भगन। मिथारन योक्टल जना, दें होत रखन ॥ ममा नेंहकाटन कलां, कटनम विजय। वामि ना शंकित होने, हाताएक गर-।

यात राष्ट्री भिन्न हैनि, हम अधिकान। তথায় আমার দেখা, যদি নাহি পান ॥ আশুণতি তার নাটী, করি পরিহার। ন্তানান্তরে ধান ইনি, সংশয় কি তার?॥ कमनार शरिक्श, अहेत्राश निया। क्य । दाल तकिटलन, नीत्रव इहेशा॥ উভয়ের অভরণ, কুরি বিলোকন। मरन मरन कतिलांम. जुलना उथन ॥ কমলার অলস্কার, মুমোহর বটে। मीखिगान ट्राला ना त्जा, रानीत निकटि ॥ লফ্রীর ভ্রমার আছে, অনেক ক্রুতিম। সরস্থতা-বিভ্রণ, সব অঞ্তিম ॥ लक्षी-पृथा छेन्छल, मांथारक छित निम। কিছু দিন পার ২০, মকলি মলিন। বাৰহাতে জনাগালে, হোতে পাতে কয়। भू निक्रथ गूला कांत्र, कथन ना त्रा। বাগীশার ভূষা মর, নিয়ত জলর। बावशांदत मूला बांदफ, कांदरा नांखिनम ॥ विटमानांत विमा कात, भटननात सम। কি বড় কি ছোট, কিছু হোলো নির্পণ । পুনরায় মনে হয়, সংশয় উন্ম। लार्थ खरन कानगरछ, तारशामक नग्न ॥ नित्रिया मक्ती-भारम, हाई अकतात। महत्रकी-शारम कार्य, प्रिथि शूनर्वरात ।

লক্ষ্মীরূপ বিলোকন, করি যে সময়।
লক্ষ্মীকেই একেবারে, বড় বোধ হয়।
আবার বাণীর রূপ নির্মিলে পর।
বাণীকেই বড় জান, হয় আশুতর ॥
এইরূপে মনে মনে, কত ভ্রমোনয়।
কোনমতে শাহি হয়, সংশ্য বিলয়।
তাবাক্ হটং আমি, থাকি এক পালে।
কোন কথা জিজোসিতে, নাহি পারি তাসে

সরস্বাহীর প্রতি লক্ষীর উক্তি।

मठा दिए, क्यांगि इन्हें, ट्यांगांत कल्ला।
गठा दिए, जूर्न इध आभांत क ल्ला॥
मठा दिए, त्यांग आया, ट्यांगांत मचान व मठा दिए, त्यांग आया, ट्यांगांत मचान व मठा दिए, क्यांग आया, ठत महिलान। मठा दिए, क्यांग आया, ठत महिलान। फठा दिए, क्यांगांत कल्यान। फाउं दिए, क्यांगांत कल्यान। फाउं दिए, क्यांगांत कल्यान। फाउं वहें दिलाल कि, नाहे मुग मान? ॥ क्यांग दिलार कि निएठ, इस श्रात्रका। क्यांग दिलार क्यांगांत करें। विवादन प्रस्तं, क्यांग कथा नाहि कहे। स्थान द्यांग ठत, स्थांगांत महे॥

(वार्धनमूपश्री

বড় বোন্ বোলে কত, মাল রেখে চলি।
হাসিয়া উড়াই সব, কিছু নাহি বলি।
আমার অপেঞা তুমি, বড় বড় নও।
তবে কেন বড় হয়ে, মানা কথা কও।
রাথি মান, ডাই খান, পাও পায় পায়।
আমি না মানিলে কেবা, মানিভ ডোমায় ?।
বয়সেতে বড় হও, কভি কিবা ভায়।
লাজে বড় হোতে পারো, তবে বুরা যায়।
আর না আসিব বোন্, তব নিকেতনে।
এইবার শেষ দেখা, হোলো তব সনে।

সরস্বতীর উক্তি।

আমার বচন ধর, কোন পরিহার কর, কোন করা না হয় উচিত।

ব্ৰিল, ম সতা কথা, তাতে কেন পাও ব্ৰেণ,

কি বুনায়া ভাব থিপরিত।

ছু বোনে করিলে হন্দ্ৰ, লোকে কত কৰে মুন্ন.

নিয়ত করিবে উপহাস।

অনুজা ভণিনী হোয়ে, কেম কটু কথা কোনে,

किंद्रिक्छ निक गोन मोगे।

প্রণয়েতে হয় খাহা, বিবাদে না হয় তাহা,

ज्ञान कि जोस ना दिरमोर्निस।

मारमा आंत्र माहि मारमा, मिरल छूमि छान र

आणि कछ दार-अक्रानिनी ।

তুমি গুণবতী সতী, কে দিল এমত মতি,
আজু কেন স্বভাবে অভাব ?।

যত অনুরাগ তব, করিলাম অনুভব,
কি কারণে ঘটিল এ ভাব ?॥

অন্য দিন হেখা এমে, কথা কও হেমে হেমে,
স্লানমুখী কখন না হও।

হেরিয়া তোমার মুখ বিনীর্গ হতেছে বুক,

স্লম্ভ ছেড্ডে অন্য কংগ কও॥

लक्षी।

भिक्कः त्यन वक आंत, विका त्यम वक आंतः

कामताल खाँगिमाम, कर वारकातः

कामा त्यान खेलात, कांग्रं त्यान खेलातः

कामा त्यान वक त्यान, गठ त्याक शतः

कामा त्यान वक त्यान, गठ त्याक शतः

कामा त्यान वक त्यान, गठ त्याक शतः

कि करेता त्यांका कांग्रं कांग्रं कांग्रं का ।

कि करेता त्यांका कांग्रं, अत्या नित्य कांग्रं ॥

किति! आंश्रि कि मामाना निति! आंश्रि कि मामाना ।

कांग्रं कांग्रं कांग्रं कांग्रं ।

कांग्रं के अधानना, आंश्रि करे आधानना ॥

वित्र कांग्रं कांग्रं मात्म, वत्य श्रमा ॥

वित्र कांत्र कांग्रं मात्म, वत्य श्रमा श्रमा ॥

वित्र कांत्र कांग्रं मात्म, व्याक व्याक्षा ।

कांग्रं मात्म त्यां, वहे अवला खदला।

खांगांत्र मात्म तत्यां, वहे अवला खदला।

खांगांत्र मात्म तत्यां, त्यां खांका ध्रमा ॥

खांगांत्र मात्म तत्यां, वहे अवला खदला।

वरला आयात कि मारे ? वरला आयात कि नारे ?। यथन या हेन्छा कति, अमोशारम शोहे। कति अमाना माधम, कति अमाना माधम। সর্কারাধ্যা, কই জার আমার মতন ?। त्कता मा शृंदक कार्याग्न ? (कता मा शृंदक व्यागांग ?। जागात भूजिता दर्गाना, दकवा कि नां शांत ? ॥ भगारनरन दक ना करन ? भगारनरन दक नः करन १। मकरलई পড़ बांरक, यम प्रकरत ॥ ভেবে দেখন। ভবিনি! ভেবে দেখন। ভবিনি!। আঁমার মতন আর, কে আছে ভোগিনী ?॥ (मर्थ सम सीम कड, (मर्थ सम सीम कड। অবিরত অনুরত, ধরাবাদী বত ॥ দৰে হয়ে একন্ন, সবে হরে একন্ন। মামার পুরায় রত, থাকে অনুক্র।॥ कारता अवगत नांहे, कारता अवगत नाहे। रकतन कांगांत **उरत, मृतिरक् ग**रांहे॥ কেউ খানায় ভূলে না, কেউ ছানায় ভূলে না। আমার দোষের কথা, কথন তুলে না। যত ধরার বিভন, যত ধরার বিভব। আমা হোতে হয় সব, আমাতেই সব॥ निनि! जारि मई थात, निनि! जारि नई शांव। আজীবন দুর্দ্বশার, সীমা নাই তার # বিনামম সহকার। বিনামম সহকার। नश्मादत योकिटङ भीटत, दश्म माथा कातु॥

া দব করিব প্রচার, সব করিব প্রচার। তবে তো জানিবে তুমি, ক্ষমতা আমার #

> আপনি প্রবলা, কমলা অবলা, निमि! गरम कि ८७८वछ १। হোরে রুদ্ধিনতী, তুমি সরস্বতী, ভ্ৰমকূপে কি নেবেছ ?॥ শামিও তোমার, কত উপকার, করিয়াতি কে না জানে?। সে সব একণে, পড়ে কি না মনে, মত হোগে অভিমানে॥ एका है बहार कारण, कारण करने क्लरण, তোনা হোতে ছোট নই। यारत जिज्जानित्व, त्महे ट्ला नित्व, আমি কৰ বছ হই॥ প্রার বিভব, যত দেখ সব, দিনি আমারি তো হয়। যা আছে গাহার, সকলি আমার, वांगा होड़ा किছू नह মম নিকেতন, মুখ উপাৰন. मम एकि जक्शन। न्त्राभूत कल, जोशंटज गकल, শোভা করে উদ্দীপন।

' (वादश्यम्पर्भ।

किया बदमाहम, यांचा चां मग, আমারিতো সরোবর। আ্যার বসন, আ্যার ভূবণ, মম মণি মুক্তাকর ॥ মম ধাতু যত, আমার রজত, আখার কনক সব। ক্ষতা আয়ার, কেমনে তোমার. मिनि द्दा अञ्चत ।। তামার প্রবাল, আমার ক্যাল, আমাৰ শালের যোডা। মার্দারি জে মড়ী, আমারি জো ছড়ি-আমার টাকার ভোড়!। থামার মাতজ, আমার ভুরজ, আমার সহিষ মেষ। আমার বলদ, তামার গরদ, আমার বনাত খেস ॥ আমারি তো গবী, আমারি তো ছবি, আমাৰ তৈঠকখানা। আমারি তো সেজ, আমারি তো মেজ. আমার বিছানা নানা॥ আমারি তো পথ, আমারি তো রথ, আমারি ভোষক গলি। স্বামারি ভো জল, আমারি ভো স্থল,

व्यक्ति मागत, नहीं ।

আমারি ভো দাজ, আমার জাহাত, আমার ভাহার পালি। मकल क्षेकांत्र, खत्रनी जागांत्र, আবার যে দাঁত হালি । আমার ওদন, আমার বাঞ্জন, আমারি তো দাস দাসী। युद्रम खड़ार, मामश्री जुलांत, जाकांदीय वानि वानि ॥ আমারি তো জাঁক, আমারি তো গাঁক, वांगात मनक वांगी। আমারি ভো তাক, আহারি ভো চাক. আমার সাঁনাই কাঁসি॥ আমারি তো দেশ, আমার প্রদেশ, আমার সকল রাজা। आहात कशीन, व्हाट्य निर्मितिन, भटन करत नान कारी ! मम जिल्लामन, गम त्मनांधन, মম সেমাপতি যত। (कशिया (मध मां, जानिया जान मां, আমার গোরব কত।

ভাগিনি। বিবেচনা করিয়া দেখা, তুমি আমার অপেকা কোনমতে শ্রেষ্ঠা নও। এই জগন্মওলে যে ছলে যাহা আছে সমস্তই আ মার অধিকারভুক্ত। আমি বাহাকে বাহা
দান করি সেই তাহা পায়, নতুবা কোন ৰূপে
পাইবার উপায় নাই। যে ব্যক্তি আমাকে
পূজা করিতে কিয়া আমার অনুগত হইতে
ইচ্ছা না করে, তাহার দুর্দ্দশার সীমা থাকে
না। তজ্জনা আমার উপাদনা না করে, এমন
মানব অতি বিরল। যে ব্যক্তি আমাকে যেনপ ভক্তি করে আমি তাহাকে সেইৰূপ ঐশুর্য্য প্রদান করি।

আপনাকে আপনি বড় বলিলে কিছু বছ হণয়া যায় না, লোকে যাহাকে বড় বলে তা-হাকেই বড় বলা যাইতে পারে। কিন্তু যখন আমাকেই সকলে বড় বলিয়া থাকে তখন আমি যে নিশ্চয় বড় তাহার আর সন্দেহ কি আছে।

সরস্তী।

কি কথা বলিলে বোন্, শংনে হাসি পায়।
আপনাকৈ বাড়াতেছ, কথায় কগায়।
কোৰ ভৱে করিভেছ, আপন বড়াই।
হি ছি বোনু কিছু কি নো, বিকেচনা নাই।

जूनि यनि करें वल, निम्ला मारें छात।
मात्रा ज्ञांन करिएज्ङ, विभाल धरांग्र॥
आनि यनि करें कथा, वलि ला एजागांग्र॥
आनि यनि करें कथा, वलि ला एजागांग्र॥
आनि एकाल मकरलंडे, मृथित ज्ञागांग्र॥
आनोत्मत উउटतात, श्राज्ञांच व्याम।
कार्त्रा जर्रशांग्रत नांडे, छारन मर्भा कर्मा नीत्रव हरेंग्रा जांत्र, शिक्टिंग्र नांचि॥
तमारकत कथा जांत्र, मिर्डिंग्र नांचि॥
वार्त्रा मज्ज स्रोटल जांत्र, थारक नां कि ज्ञान
हांते स्राट्टा करनां नां, रक्ष अश्वान॥

लम्बी

(कामांत वहन खेरन. मर्ग्स अस खंटल।

क्रिन कृषि वर्ड इस, निर्ह कर्ना वरन ॥

विश्वामिति किन कार्त्र, किन्छिह क्षान।

क्ष्यमा कि चृष्टिल मां, निर्ह वर्मा दिन्न ॥

कृषि वर्गन्, निर्ह किर्मा, कर मधीन।

हुम कारत थांका कर, मा देश विभान ॥

कामि मन काहि निर्मि? कृषि वर्ड काटना।

कारत वार्त्र, वर्क्त, कर क्षांत्रा॥

कारत वार्त्र, वर्क्त, कर क्षांत्रा॥

कारत वार्त्र, वर्क्त, वर्ष्ट्राजन माहै।

मारन मारन खेद दन्ना, निकामस्य वाहे॥

थाकिरन क्ष्यन क्षांत्रा, वाहित क्ष्मांन।

कि वन्दिल, कि वन्दि, घंटित क्षमांन॥

(वार**धन्**मृपञ् ।

সরস্বতী।

এত লো উত্তলা কমলা কেন ?।

চঞ্চলা মতন চঞ্চলা যেন ॥

ভিনিনি ! আখার বচন ধল।

যেও না ক্লেক বিলম্ব কর ॥

কিলের কারণ এতই ক্রেংপ ?।
উন্মতা তোমায় হোতেছে বোন ॥
এলায়ে পড়েছে, মাথার কেশ।

লাই কি ভোগার ধীরতা নেশ ? ॥

लक्षी।

বেখালেতে মান গাই, শুধু গুপানান।
উচিত না ধ্য় সাথে, তথা স্বজনে।
আনি কি মানানাল গেছে, ভেবেল ভিনিনী গ।
মহীতে নবের আনি, পানলকারিনী ॥
আব গোটা জত কথা, বোলে এই বাব।
ভাল যেতে লানাইব, ধ্যমতা আন্বার।
বুলিতে আনাা, মানা, মাধা আনত করি।
নানা জালে নানা ভাবে, পরি নানাচার॥
অনস্ত জানার জীলা, অনল মহিমা।
নিলপেন কে করিবে, ম্যু গুন্বায়। গঃ
সন্মালা বর্হা হল, মুম জানিক্রি।
নানা ভোতে জগতের, কত উপক্রি।

व्यागांत कृशांत वाटन, मयूनव जीव। ष्यामा होटि इह स्थु, मश्मीदित निव ॥ रहेटल भागांत दक्तांत्र, घटि मञ्चलत । मबलत मह आंटम, माती जनकत्।। लक्की इंग्डिंग्ड स्टब (मथ, मांना ज्वांनः घटें। यवृक्तित वृक्ति कांत्र, नाशि थारक घरहे॥ (अटऐत फ्लांबाइ इत, मन फ्लांबाइन। মান্সিক শান্তি নাশ, পায় প্রতিক্রণ। (शंहे श्रिष्टे काद्र श्रयाः निग्न वर्षाकृत। शक्ति (शहित मात्र, अनिमाद मला কেমনে ভোগার ভক্ত, হবে মেই জন ?। কোনে তোমার প্রতি যাবে তার মন ?॥ ষাহাতে পুভিবে দেই, ভোষার চরণ। क्रियान कडिएन नम, जाह और भागामणा কেমনে সে প্রকাশিতে, রুদ্ধিত কৌশল 🖓 কেমৰে ক্রিৰে ভোগ, কেলিলেই কল ।।। उत्पटन हम भिरत छत, घट७ घड मान। কোনে তোমার পথে, হবে আওয়ান ?॥ क्मरन हाथित ताहे, ट्यांगह मन्यून 🤈 ॥ সভা ২টে তব পথে, করিলে গমন। আন্থানে হয় কড, অসাধ্য সাধন # অন্টন-নিশাচরী, অতি ভয়ন্ধরী। आगत्न जिमार ११थ, मांना मांग्रा शित ॥

CARBOTTA !

व्यक्ति कतियां शकि, कात सर्व हित ।
अद्भवरित कादि कावि, कित्यां नि मृत ।
अद्भवरित कादि कादि कित्यां नि मृत ।
अव भएण क्टक काति, क्रमांस मास्म ।
अवकाव कर् काति, द्वारि करू निर्दे ।
स्ति (अद्भवरित प्रमुक्ति का स्ट्रि-१६
दां त्रम क्रा का विकि, काकिट कारीना ।
कार्याद कर्मां वादि, सक्दन्त काना ।

सत्तेत्र कामात निनि ! कक तथा मतः ।
जनस जामात जाए। जानित निकार ।
त्वान तत्व हाई कामि, गांदात कानाता ।
जानात किन्द्र मानि, गांदात कानाता ।
जानात किन्द्र भागी, गांदात कानाता ।
जानित काहात देवे, जामात त्य रतः ।
जानित काहात देवे, जामात त्य रतः ।
जाना तत्व मादे जानि, कार्यक प्रशः ।
जान तत्व मादे जानि, कार्यक प्रशः ।
जान तत्व मादे जानि, कार्यक माद्र ।
प्राप्त काल्य मादे जानि, कार्यक मान्य ।
रेडम त्राव्य मादे जानि, कार्यक नाम्य ।
इति कारित तीति हरे, काणित नाम्य ।
इति कारित तीति हरे, काणाह-जनता ।
इति कारित तीति हरे, काणाह-जनता ।

पूर्व करण गरि चामि, छँड़िन मन्दित। णक्तित गृट्ड कृष्टे, ग्रामि, मुख्ना, कीरत B वर्गित-गृद्ध इरे, खूबर्ग कुवन । স্ত্রগর-গৃত্তে পরি কাটের গড়ন ॥ कॅमिनिक गुरे हरे, यही तांही शाला। गानित इंक्टम इके, कुक्रमत मोला। भान करभे करि आबि, तकिक-जोगात। महाता ग्रेटर बहि, मत्मान-काकाता। मगोष्टां ब्रथ्य ब्राट्स, मन्त्रां कक-द्रश्टर । অব**হি**ত্তি করি জামি, অতিশয় মেহে। रम गांत गारमां करत, आमि तमहे त्वरमः। खोत घटडे नाम कति, मकन खेरम्रहा ॥ रावर्गमा (जानां जनां, मीमेजी-मिन्ता। াদকলিখতো আমি, সব আমাতেই রয় **॥** वागि छक, जागि गुल, जागि फूल, कल! आबि है कि।, श्रीष कड़ी, श्रीब एक कम। व्योगि तम, व्योगि पृत्रा, नुव्यामि शतिशाम। व्यापि भूग, व्यापि, द्रांत्री, कांगि होन श्रान् ॥ মবল এলাড় আমি, আমি দাবুচিনি। ভাগি দৰি, আমি, হুদ্ধ, আমি য়ত চিনি॥ অানি ভাড়, আৰি খুরী, আনি হাড়ী नता। जानि मधा, जीमि शाला, जीनि तमकेता व्यक्ति गढ़ा, आणि धानावजा। व्यक्ति होडी, क्रांति त्रकी, क्रांति जारी कक्रा

(वार्थनमूम्म ।

আমি ধৃতি, আমি শাটা, আমই কমাল। णागिरे छेड़ांनी जात, जागि स्रोड़। गान. সামি যোড়া, আমি গাড়ী আমি নিকেতন। अ। मि भानकी, कारि ठाँकी, आपि कारोगम পরাতদে এইরপ ক্রব্য আগণন। भिश्वक गरतत करत कलानि भौतन ॥ দকলের উপতে, আমার প্রান্থ র্ভাব। সহজে না বুলা দায়, আমার এ ভাব। আমার সক্ষ সন, আমার স্বরপ। क्तान शत्न जाए, नांग जांत करे। সভাত সকলি এক, কি আছে সংশয। रिनिम्य क्रिलिटे, धन लांड इय। मनात मेथंती जामि, संव त जायाहा जामि पार काछि छोडे, ठिनटए भः माह । मम अनुहल्ल जल, बहांभारम बरू। লোমার কি অনুগত, ভাক্ত আছে তত্ ।। ভিও ভক্ত হোতে কেছ, সহ**ত্তে ন**্চীয়। १७ द्धन त्यात्र करत, निश्नमभूकोङ्ग তব ভক্ত ছোতে হোবা হৈ জি করে দান। তারে তারা একেবারে, করে অরি তান ॥ उन श्रीं उन्ति निमि, श्रोद्योविक नम्। করিলে ভাড়না বহু, তবে মন লয় 🖟 मम जल होएं होए, इस्ताशीया (काल। जना ज्ञवा क्लान (नव, नामा जिल्लिक) কথৰ ৰা চার শিশু, পুরিদে ভোমার। जात गाँछ। धहे कथा, रिनिहा दुनात ह " वाङ्यिम ! दिलाश्रिम, कद्र छेणार्कन । गातनात भूजोकर, तिमाह कांत्रलं ह रिकार दर्शास्त्र माइवनि, कड थम गारित। गाजी त्यांजा त्यारक कृति क्यांटम त्यकारत। विनाः नां विक्रित वाष्ट्री, रकाथां भीरव अम। ं दिनारम श्रीहरन स्थरल, सनगी ग्राथम १॥ तगरन भेतिरन भेटतः छेख्यं तमम ?। किरम औं क बस्कात, स्टब कर बस १॥ विना। मा भिषिद्धन वाष्ट्री, दिवाह मा घटन। भाईतक देशदग्र कृषि, वित्रकाल बटन # अमुरकत रमहका छाटल, 'खारताथ नवीम। निरंबरक बारबंक विकान, त्नारफ निर्मित कि डाइरला अथन तम, रगरग्रह डेक्नगम। ্তাই তার কত মন্ত, ব্যেত্তে সম্পাদ। मन्द्राहम उद्य जात. कड़ने दर्गाहर। रहेशारक वर्षीकृत, मकन ग्रामर ॥ विना निथिताई यात्र, अम मांठ इत ह धर जों । होटन लोंन, कर सूर्य बन्न णाहे बाज अहत राजा, जेमाराम धना। (थनांत्र का दर्गातं तक, त्मथा शंका करे। वानाकारम त्नभा नेषा, मा करते (य हिरम। हबाह नमह हरत, यूद् रबंदन स्थरन ॥

शटत जोत कुःथ कम्, वैटिन यन काल। जात कर्मगाय केंद्रि, कुकूत भिशिल्! लिया भेड़ा रनारथ भारे, अरमन कांगारे। द्वारथ द्वारथ कोड़ मांडी, श्वेरताक लोहे ॥ जारिया किছू कून दिल, कूल मांजा मिता। ्म मगरत जोडे जोत, स्टार्टमिल निर्हे ॥ এখন তে। নাই আর. কুলের বডাই। গকেবারে পড়িন্তে, কুননানে ছাই॥ কাদীয় কপাল মন্দ, সন্দেহ কি ভার। তাই তার হাতে পোড়ে, ধারাকার সার । কিছু লেখা পড়া যদি, শিগত সে চেঁড়ে। তবে কেল গালি লিড. থেলে মুণুপোড়া। তাৰে কি হাইত কেউ, তার প্রতিবাদী । सांख कालर ५३ छत्त, के कि उ कि का की है। শক্রমথে ছাই নিয়ে, সচীর রূপায়। अधिका एक कार्या परिवाह कि मार्थ । বাঁচিখা থাকিও যদি, কাদীর মা গাপ। তা হোলে কি হোভো ভার, এতই সন্তাপ । ভাই যে ভেছের বশ, ছোরেছে সদাই। অভএর ভাই তার, দেঁতে থেকে নাই। क्षेष्ट (करल (भट्डेंट कुर्ति काछ। कार। इंडी (करंडे खारहे, मति दिन हाउ । পা বিয়া ভাষার ভাষ, পায়ের উপরে। (क्वल विमान्न) थारक, कि कुई मां करत ।

महोज्दल वनहीन, खांगी इस शह। এরপ ছুর্জনা **নাছা, ঘটে থাকে** ভার। गार्शत की श्रुटक्सा, डांटका दहना मह। डोता कि श्रंत्य कहे, श्रुकर मा मा অভএৰ গুৱে ৰাছা, হও মাৰ্শান : विमां आदलाधनां कति, क्ष विमातान ॥ বছ ছোলে জী পুলেবা, দখন ভোগার। . ভাত কাপতের হুংগে, কাঁদিংই লা আর " ম श्हेंकर्श कमनीता, विविध वक्तम । নিভ'বিজ শিশুগাৰে, ভূলাত হতকে। शन-व्यामा बाला जिला, अप्रोक क्लोनाहल। उजांगारक भेरिकटक रमश, भिक्कारण वटन ॥ অ'মাকে পামার ভবে, সঞ্চনা ভোমার। आगांदक पांडरित गम. महस्याम नदार ॥ आगारक भारति आगा, श्री ने शिकिए।.. ্ছাম কৈ পাইতে কেবা, হতন কৰিত '।।

् मदच्छी ।

আমার ভারতী, শুন লক্ষী সতি, কিঞ্চিৎ গীরতাপর। কেন স্বসা সৃত্, করিছ কলহ, আশু কৈনাৰ প্রিহর॥

(काट्धनमृत्रा।

তুনি বিলোদিনী, অনুজা ভণিনী, তাই এত কথা সই। যনে শত আছে, বল যম কাছে,

ভাতে বিবাদিনী মই ॥ বাছাতে আমান, অ গুণের গান.

আকা! করিলে সোনেশ। কোলো কি কারণ, ভোষার এখন,

মম প্রতি এত বেষ গা মুগে অপেনার, বেগুণ প্রচার,

কং। সমুচিত ভাতি।

उदि pet कति. मधा स्नि शरि.

কোরেজি লো গুণবৃতি ! ॥ পাঁত কাল বেশ, ভাবিয়া নিশেদ,

त्रभाग करिं। करता

যথন যেমৰ, তথন তেমন,

করিয়া সময় ছরে । আমি মিতে বালী, বলি মত্য বালী,

সংশ কণিতে কি হানি। আমার বিষয়, অন্যে ভাঙে ময়:

गांनि निर्ण यह जानि॥

তুমি নিজে মানা, জানাকে সামানা,

তেবেড় কি মনে মন্ম। সামার বচন, কলিলে প্রিবণ,

जग गरिन छज्याति ।

সত্য বুটে কর তুমি, জনতের শিব मठा राष्ट्र (जांगा दिस्ति, किंग्र कीर। मजा वर्षे मकरं नहें, उन अपूर्व हैं। मक, बढ़ी जरवं (मह्ने छव मर्क गर्क गर् সতা বটে সকলৈই, তোনাকেই চায়। मजा बट्डे मकरमंडे, शर् उन शाहा। মতা ৰটে নামারপঃ তোমার ফাকার! मठा नर्ते कोमा दिनो, हरल का मश्माह ॥ সভা ৰটে তুমি হও, ধর;র বিভব। সতা হটে ভোমা হোতে, সকল উদ্ব II গ্রাই ভূমি আপদাকে, কর বছ জান। তাই তব বাড়িয়াছে. গও অভিযান H ভোমাকে দামান্য নেত্রে, দৃটি করে ঘাবা। ভোষাকেই বড় বোলে, জানিয়াছে ভার। भर्तात अटमक इलोक, मांगोमा मेंग्रस्म। ভোমাকে হে দরশন, করে প্রতিক্ষণে॥ ভোমায় অনেকে তাই, বড় বলি ভানে। ভোমায অনেকে তাই, বড় বলি गोरन। कान-त्मर्य त्य जामीर, कटत तिरलकिन। कांति त्व त्कमन छत्नां, जारन (भई जन ॥ অল্প লোক আদ-নেত্রে, হেরে লো জামান। মম দরশন তাই, অপে লোকে পায়। यान्य त्मारक अहि त्रांन, प्रम धर्न शीव । मम अरहर (। छोरे, कल्म लाहरू थांत ।

(बार्ट्सम्पूष्य ।

নিতান্ত অভান হারা, নিতার অক্সান। क्यरम जानिद्दव खांतो, जासात गणाम ? त जल्जानज-कृत्न जूटन, जटनदर्दे और । ्क्यरन आंकिएक जांबा. शांद्व सम कोट्स # महरकारे भागभारय, जतमरकारे वात । भक्षांत्व त्यरक द्यारल, घटके बक् नांच । मकटलई शांभभट्य, क्टबट्ड गमन। वर्षाश्रद्ध शर्याचेन, करतरह क स्रम ? म भारभन्न करभक्तां यपि, धर्म देशों रहा । তা হোলে সামি লো ছোট, হব লো নিশ্চর ৪ ভাজানেরা রভ থাকে, ভোমার সেবার। তোমার রুক্তির রূপ, তাদিবো ভুলার । রোগির কুপঝা খেতে, সভা আকিঞ্চন। अंध्र श्रांचेट्ड टमचे. या तांत्र कथम I তাহার আত্মীরণার অমনি তথ্য। कड कथा रहेंस जात, मरनद्र मजन । " बहै वात कर्त कत, छेयश मितम । था চाहिट्य डाइ। त्यटक, कतिय अर्थन ॥ (थटफ नित नामा फन, भीजन कीनम। (शत स्व हरत जर, डाशिक कीरन "। कूलवा शांबाद कारण, त्म द्वांनी त्यमन। ইচ্ছার প্রয়থ পান, কল্লে ভড়কণ ঃ মেইরণ মাড়া পিড়া, অভি সম্ভদে। धनलां क्र क्षांना निर्धाः क्रुलांत मन्दरम ।

0

धनमां छ जाना कति, रांनक-निष्या। অবিরত আমার, সেবগে রভ হয়। অজ্ঞানেরা মনে ভাবে, আর্থের কারণ। मश्मारह (कर्न घह, निका अर्बोक्स ॥ তা হইলে ধনিদের বিদ্যায় কি কাজ ?। विमाशीम दर्शतन जाता. दरम शांश मात्र १॥ अञ्चल (मध (वान्, कति विरवहना। धटमह कांत्रने मह, यम च्यादाशना ॥ ধরার ভিডরে হয়, যে জন সভাল। সে আমায় অবশ্য, ক্তিৰে বভ জান ॥ ভোমার কুছকে ভার, ভুলিবে না খন। তোমাণ বলিবে ছোট, বথন তথৰ # अटलो निक्ति! भटन टेस्टर, एमथ (ली कोरोर) একেবারে অভিমাতে, কর পরিহার। অনুভবে বুনা গেছে, নও জ্ঞানবতী। নতবা ঘটিৰে কেন, তোমার এ মতি । ॥ कान मा कि जामि ला, क्वम मिनि करे। সার জান কই তব, সার ভান কই ?॥ मेरीजान एक प्राच, जेखम विद्या। अधिक मी रह आहा, अधिक ना रह ह ভার অতি অংশ ভাগে, মন্দ সমুদর। क्षि कड़ गकरलड़े, कहे कथा कर ॥ अत्मदंक (जीमांत एक, मिथा) किंछू नहा। নিয়ত তোমার ভারা, কেনা হোরে রয় »

(बाद्य-पृत्र ।

মন অমুনজন ভাজ আতি অংশ লোক।
অংশ লোকে পেয়ে থাকে, জানের আলোক।
তব বছ ভাজ বোলে, তুমি কি লো বড়।
এ কথা কি মানে সেই, তোমে যেবা মড়।

ভগিনি ৷ আর্থি তোমার সহিত বিবা করিতে ইচ্ছা করি না। ভূমি কোধভরে এ এক বার কত কটু কথা ব্যবহার করিতে। ভোনার কথা শুনিয়া হাত্য না করিয়া ক্ষা इटेए भारतिना। जाभनारक वर्ष मध्या করিবার নিমিস্ত যত অলীক তর্ক বিজর্ক করি তেছ, জোমার গ্রতি ততই সম্ভন্ধা জনাই তেছে, তুমি প্রথমেই বলিয়াড় যে সন্ব্য তোমার অনুগ্রহ লাভ ইচ্ছা করিয়া বিদা , ভ্যানে मज़नील हुई हा शास्त्र, धनः निणां ভ्যा করিলে যদি তোমার কুপাপাত হইবার সম্ভ वना ना थाकिए, जांव करहे विषासूनीयन र রিভ না ৷ তোমার একথা যে নিভাতই ং গ্রাহ্য তাহার কোন সংশ্য নাইন আরাধনা করিলে যদি ভোমাকে পাও • বায় তবে আর তোমার স্বারাধনা করিব

त्वरिक्षातः !

প্রয়েজন নাই। বিনা জারাধনায় কেতৃই
জামার অনুগ্রহ লাভ করিতে পারে না, এই
নিমিত জামি আরাধ্যা হইয়াছি, মৃতরাং
তোমার অপেকা শ্রেষ্ঠাও হইয়াছি।

मूच नामानिता कर्या कर त्यां बतात ।
वफ त्यांस त्यांत मान, ताथित ना फात ॥
वस्तार वर्ष त्यांत मान, ताथित ना फात ॥
वस्तार वर्ष त्यांत त्र , कार्यमान कर ॥
वस्त्र वित वह त्यांत्र , त्यांत थांत ।
कांत त्य वस्ति वस्तु , वस्त्र वित कांत्र ॥
त्यां कांत्र त्यां क्यांत म्यांत ।
स्थान क्यांन कांत्र , वस्त्र कांत्र ॥
स्थान क्यांन कांत्र , वस्त्र कांत्र ॥

সরস্তী।

দে কণা কাজের নয়, উত্তানে হা বলে।
ক্ষানের মতে বল, জানী কি লোচলে গ্রে
ক্ষাতে যে সব লোক, ক্ষাতে বসতি।
ভার মধ্যে অনেকেই, জানহীন অভি ।
ক্ষানে ভোষার বড়, বলে বহা ভহা।
ক্ষানে বিহাস করে, অজ্যানের কংল

काटक काटक वह दमारक, छत क्रमुगाउ। ভোমাকেই বড় তারা, বলে ক্রমাগত ! छामी बादत वर्फ बदल, वर्फ रह तारे। क्वानित्र निकटि कारता, अनूरवांध दनदे ह राष्ट्र जाउन्दर जर, रुद्रि विलोकम। बनाशांटम कूल यांच, अक्टोरनत बन । মনে ভাবে স্থাপে রবে, ভবাপ্রায় পোলে। তোমার अर्फना कटत, जन निशं एकटल । দয়া ধর্ম সভাতার, করি পরিহার। নিয়তই পূজা করে, চরণ তেওঁনার # क जित्मत जात जाता, धराव जिन्दा । একেবারে বাসা করে, অধ্বর্ধের ঘরে 🕽 ক্রমানত হইলেও, আশায় ব্যক্তি। खर् डाव फारमां नम, मा दय विकिश ! खालांन गोहात ज्ला, ताहे वा दहगन। खन्दाहर बूट्या नन, एड जुनगण ॥ खड्यव हाड (रान्, वड़ तना (रानि) विका विकि जात दक्न, कतिर उष्ट भान । रवाल व्यट्य कटर दमना, भनीत थांदर। क्यात्न तम खानित्त, कुरस्त चौत्रातनं ? ॥ कामा कि कथन जारम. बामांत कि दम ?। **अध्यक्ति कि कालामग्र, कारन कि कालम** ? । व्यवार्तिक एवा कात्र, मनाई कर्थ। कमरन बानित्व दमहे, धार्नित्कत सूथ ।

र्योवरम कि ভारवामग्र, वांमरक कि जारन १। कांना कि जानिए शास्त्र, कि जानम शास्त्र । অন্ধ কি বলিতে পারে, শোভা কারে কয়?। চিরবোণি লোকের কি, স্বাস্থ্য-সূপ রয় 🤈 🛊 ভক্ষরে কি ভাল লাগে, চল্লিমার আলো?। कारक कि शिरकड़ इर, कड़ लार्श छोटल! म অসাধু কি ভালবাসে, সাধুর বচন १। अक्टारी कान्दिर कि. सम्रक्ता कि धन ? ह অপ্রেমিক জানিবে কি, প্রণ্য কেমন গ मदलाहत्व भरत, थम कि क्यंम ? ॥ नीं कि कथन जात्न, मानिद कि भान ?। अखान कि ओरन करू, आनित कि खान ? ! অভ এব মম গুণ, তুমি কি জানিলে 🕮 বড় হও এ কথাটি, মুখে না আনিবে ॥ নিভান্ত অসার বোন, ভোমার পৌবর। खानिगर् जुन्ह करत, ट्यामात विजय। তোমা হোতে হয় শিব, জীবের মেমন। ভোমা হোতে হয় পুনঃ, অশিব তেমন। তুমি সবাকার কর, যত অকলাণ। তত কি কর লো বোনু মঞ্ল বিধান ?॥ আমি কথনই কারো, করি না অহিত। (करन माधन कहि, मदाकांत्र हिछ । बाब किंछू विनवांत, मारे अर्शांजम। এতেই যে বড় ছোট, হোলো নিরপণ।

त्वन इत्दर मात, कीत हाना ननी ! रामम क्रानित मोत्र, मखदकत मानि ॥ रामन उकद मात्र, सूगधूत कन। ষেমন সর্মী-সার, স্থবিমল জল। ষেমন পদ্মের সার, মধুই কেবল গ যেমন ভোজন-সার, কলেবরে বল ৪ যেমন চরণ-সার, সুপথে গমন। रम्बन खारन-मात, मुक्श खारन । (धमन नवन-मात, डीर्थ महानम। रम्भन मार्मात गांत, सूतांम अहल ह (यमन इमन!-मांड, मधुँह वहम। যেমন ভাতুর সার, কেবল কিরণ্ড বেমন শশির সার, সুধা বিভরণ। र्यभन स्टब्ड जोड, शांत्रां यदियन ॥ মেন অস্ত্রের সার, তীক্ষতর ধার। यमन वर्लंब महि, शंद-उशेकात ॥ रामन ऋर्ग-मात, (करल ऋर्ग। ষেমন ভাষার সার, সমুদয় বর্ণ ॥ বেমন ইকুর সার, চিনি আর খাঁড। विमम मिट्डत मात्र, तक बात हो ।। সেইরপ আমি বোল, ধরণীর সার। विकल कीवम जांत्र, आमि महे शांत ॥ व्यामि यउ कति, मास्म ! उद डेशकात । তত কিছু তুমি কোন, কর না জামার 🛭 যদিও তামার কাছে, তাদা সুক্রিন। যদিও অনেকে নয়, আমাব অধীন । তথাপি আমার যশ, গায়ে সর্বজন। তথাপি আমার বশ, তব ভক্তগণ। ।

नकी।

वात राज निभि त्यांत्न, यक मौन जानि : বার বার তব কথা, যত সোচয় থাকি 🕯 ভড়ই দে বাড়াবাড়ী, করিভেন্ন কেন ?। कि कांद्र (एवादिव, केंद्रिएक एक ?॥ मूथ जिथारमधि दुनि, रोधिटन ना आह । अरूगांन कहि (शहि, उर गानशोत ॥ इक्रिंग टी कांग्वजी, क् नत्त्र जांगांत्र ?। শুনিয়া ভোষার কথা, অন্ধ জোলে যায় 🛚 রাগালে আমার তুমি, রাগালে আমার। विश्वाम मां कर ज़ुशि, लांतकर क्यांग ॥ व्यामीटक विनशं रफ, ब्रांट्स बाहा मान। তোনার विजंदित वुनिः, তারাই অজ্ঞান ॥ मिटल जुनि कामरजी, बकाम मराहै। **अहे कि छोटमह कवी, छोगांह सुधांहै।** আমা হোতে জগতের, কি কি অপকার। ताजा कति वन प्राचि, श्रीन अक्तरि ।

(वार्डनम्मरा

সরস্বতী।

কসহকারিণী নয়, যে কুলকাণিনী: अक्षम-अनुगरा, गूलश-गामिनी ॥ ভোমার সহিত করি, তাহার ভূলন'। लक्की लक्की नर्न डांर्ड, गक्ट ललमां ह कलर कतिए। जुमि, डाडिएडक भली। गांखारन ट्रांबोरन मध्यी, कई बांच नन्। ভব গুণ কেছ বুলি, অবগত নয়। मूनीमा नांतीरक नाहे, जिन्ही जांता कर व ভাষারা আদিত থাকি ব্রভাষ ভোষার ! मुभीनारक लक्की एरद. रुनिङ कि पार १। তোমা কোনে হয় হত, অনিস্ট ঘটন। একে একে সমুগয়, वानिव এथन ॥ व्यागांति द्वा विभागं, व्यामि विमार नेश्वती ! **ভোমারি** ভো ধন, लिका! ग्रुपि धरनश्ररी । मध्यां किंदर कारण, दिवस कार कर करे करे त्नारत माना कथा छेणाशन ॥ विना गिन राष्ट्र हम, जामि न ए जारा। ধন বড় ছোলে ভাবে, তুনি বড় ছাবে 🛭 विमार्गत थोकिए में दर्गात. एम दर्गत कांचांत । াধনের হে দেখি জাতে, সে দেখি ভোমার 🕯 विमानि दिनादेश क्यो, दिन्ह गाहि कहा। चाउ अद मग देनांव, मार्ड की निम्छत ।

ধনের ন্দাণ্য দোষ, করিব প্রমাণ।
ভাশহিব ধন হোতে, যত অকল্যাণ ॥
ভাতএব লক্ষিয়া আরি, করো না বড়াই।
শুনিলে পলাতে আরি, পথ পাবে নাই॥

বড় নিদি বল বল, বিলম্থে কি আছে কল, বল শুনি গনের কি লোব?।

আমি অভি ছুউমডী, আপনি ভাজনী অভি,
জান না কি, কাবে বলে বোধ।
ভোমার যে রাগ হয়, সে রাগ কি রাগ নয়,
এ বে বড় আন্চর্যা ব্যাপার।

রাগিয়া বলিলে যড়, সহিলাম ক্রমাগত,
ভারো কত বলিবে আবার ধ

मत्रश्व छीत छे कि।

क्रियान वित्र तीम्, जान जन यम।

क्रियान के महि यट, धटमत कांत्र १ ॥

क्रियान कांत्र तम, इस तम्या तम्या।

श्वरणात त्वत्म, मजास मना त्वत्य ॥

क्रियान करम तमामरम, त्वांस्कृत हरम।

तरक्षत्र अमिनी वरह, मसरतत्र श्वरम् ॥

ं (बार्यमृतंत्र।

মারামারি কাটাকাটি, অবিরাম হয়।
একেবারে হত হয়, কত হাতী হয় ।
একেবারে অনেকের, পরাণ বিনাশ।
অনেকের উপস্থিত, হয় সর্ক্রাশ।
যথা তথা শুনা যায়, সুধু হাহাকার।
যত অনুষ্ঠের মূল, অর্থই তোমার ।

ছুপতি না পোঁতে প্রায়, প্রজার মক্ষল।
করেকরে কর লয়, করি নান। ছল।
ছুংপের সাগরে ভাসে, প্রজা সমুদ্র।
তথাপি রাজার কিছু, দয়া নাছি হয়।
মকক্ না প্রজা সব, ফাতি কিবা ভায়।
ধন মাত্র এলে হয়, ধনের শালায়।
একটুক্ সুপ কারো, মানসে না হয়।
কথন্ কি হয় বলি, সনাই সভয়।
ধরায় এমন রাজা, কত নেথা যায়।
ভাজার নোভের ভবে, প্রভা কেশ পায়।
রক্ষক ভক্ষক হোলে, কোথায় নিস্তার।
মক্ত, অনপ্রের মূল, ভার্যই জোনার।

লকারা ভাকাতি করে, সাদিয়া ভবলে।
স্বকার্যা সাধিতে ভারা, বগে কত করে।
হার হার দেখ বোল্, গ্রনলাভ ভরে।
সংরে না থাকে দরা, সংরের উপরে ।

धटनत कांत्रन स्थु, किंदित हुन्ति केंद्र।

व्यवस्थित भन्नां श्रीरिक, श्रीतिस क्रियंत ॥

श्रीयकता मांत्रां श्रीक, ज्याति केंद्र ॥

व्यवदि छती लांदर, ज्यान छती श्रीत ॥

क्ष लांदक मस्यातिक, करत जहेत्रश्री

मिन निशां जिँदनम, श्रीतिस हुर्श हुर्श ॥

क्षातिकारत कांगोक्कृति, करत लां व्यश्वत ।

व्यवस्थित मृन, क्षीहे 'क्षातात ॥

কত কুমবতী তাজি, আপনার পতি।
ধন-প্রতাশির করে, কুপণেতে গতি ।
ধনারাদে কালী দেয়, অকলম কুলে।
খানির বতন হত, একেবারে ভুলে।
ভাল করে কেম কেম, জপ্রাল ঘটায়।
ভালিও মজে আর, অপরে মজায় ।
ভালি কোরে হত হথে, কত জ্মীনার।
ভালিয়াছে, জানিতেতে, জানিতেও আর ।
ভাল কোরে রাজঘারে, অবিশাসী হয়।
আর কি বজের জয়, পূর্বরূপ রয় १।
ধন লোতে হয় লজিন, এরপ যাপার।
ধত অনর্থের মৃল, অর্থই বোয়ার।

মিথ্যাসাক্ষী হয় কেল, করি নানা ছল। অনেকের মটে ভার, কড অয়জ্বল।

(वार्यमम् पश् ।

कान रिठांतक करत, कानांनरक नार्तत ।

या देन्हा कितरिल भीरत, भूभ यनि भीत ॥

कान करत नानांरक, कानरिक करत भाना ॥

कान करत नानांरक, कानरिक करत भाना ॥

कान करत नानांरक, कानरिक करत भाना ॥

करनरिक नामप्र करत, धरमत आभाग ॥

मशिक्षेत्र हर्स अलू, कानिर्ध क्रनांग ॥

भावित्र स्टाल जात, सारत करे गान ? ।

यह ठाँदे, करु भारे, जांदा क्रमांन ॥

मना धानांधानि लांद, आंत जित्रकांत ॥

गल कार्यत मृत, अर्थदे रक्तानंत ॥

বন্ধুতে বন্ধুতে আর, গৃতিক দা প্রাণ্য বন্ধুতার পরিহরে, জরি প্রায় হয়।
সংহালরে সংহালকে, হল মলাস্তর।
অন্তরে অন্তরে হয়, প্রেচ্ছের অন্তর ।
একেরারে ভিড়ে হায়, একতার পানা।
লোকে করে পরিহায়, মটে সর্কার্যানা।
লোকালয়ে লোকে করে, বাল বিসম্বানা।
করে অন্তিরে কুপ, পরস্পরে খানা।
সংসারকে বোলহয়, অন্তরের মার।
কেবল ধনের ভরে, আতা হয় পর।
জার্থের যে লোক লাই, কিসে বলি আর।
যত অন্তর্থের মূল, অর্থই ভোমার।

4-

अर्थत कांत्रन आहा, शत-अक्नान।
आत्मरक ध्रीर्थनां करत, इस मध्रमान॥
आत्मरक ध्रीर्थनां करत, इस मध्रमान॥
आत्मरक रतान रहांक्, रेनरमात ध्रीर्थना।
आत्मरक मक्क्, नक्षांभरासत कांमना॥
आत्मरक ककक् इन्स्, केंकिरलत मन।
मन थात्र आत्मरक, खंडित जांकिक्षम॥
कांमरित कांमनां, श्रेष्ट्रक नह चत्र॥
आत्मरत कांमनां, श्रेष्ट्रक नह चत्र॥
आत्मरत कांमां रहांक्, रामानित नांमना।
आतंखक तांका रहांक्, प्रमानं कांमना॥
तांकभरथ पृत्ना रहांक्, धार्यमा राभात।
यक आवर्थत मृत्र, आर्थहे रहांमांत॥

পুর্বে ভারাভার হয়, ধন জাগমনে।
পুর্বের জরস্থা জার, নাহি থাকে মনে॥
বাহার সহিত হিল, অটল প্রারার নয়॥
থানাবিক মিত্র যেবা, ভূলিরার নয়॥
যার সঙ্গে, মনোরজে, থেলেছিল কত।
একত্রে যে বন্ধুসহ, বহু বর্ব গাত॥
অনেকে এমন মিত্রে, পেয়ে কিছু ধন।
হার হায়, একেবারে, হর বিশারণ॥
ধনমনে এথকার, মত্ত হোরে রয়।
চেনে না বলিয়া ছলে, চায় পরিচয়॥

(बारथन्तृषश्च।

মিত্রে মিত্র ভুলে যায়, ইকি চমৎকার। যত অনর্থের মূল, অর্থই তোয়ার ।

सत्त मानरवत सरन, जत्य जनकात।
तिथित्व (निथात्व सनी, शरत कृणांकात॥
व्यवकात-जनकात, रहरत (निथ देश।
वृक कृणांदेश शास्त्र, मकल ममत्र॥
व्यवकात जारन ना स्म, रहांस्व दरन मन।
व्यवकात जारन ना स्म, रहांस्व दरन मन॥
रहांन स्नांक गृरक वस्त्र, जज्ञार्थना नाहे।
वक श्रम व्यक्त गृरक वस्त्र, जज्ञार्थना नाहे।
विक श्रम व्यक्त श्रम व्यक्ति, वृक्ति स्मवेत्रशः
व्यक्त मनन व्याम, जात जञ्ज्ञला॥
वन स्माय्व स्मन, ज्ञार्थहे द्वामांद्र॥
वक व्यक्त स्मन, ज्ञार्थहे द्वामांद्र॥

ধনবলে ধনী করে, কৃত অত্যাচার।
ধরাধানে দে সকল, অংগাচার কার ?॥
সাধুরা কুজনে ছেরি, সভর ধেনন।
ধনহীন ভর করে, ধনিকে জেন্ন ॥
আনেকে অলস হয়, ধন-পেলে পরে।
নজভাকে একেনারে, বিস্ফুন করে॥
রিপ্রল করে বল, ভাবের উপরে।
ধরত্তির ভয়ে আহা, নির্ভিণ্ড সরে॥

(बाटसम्मूनम्।

भीव बूर्क, शृक्ति स्टॉन, स्टब्स्स स्टू । विट्यक ना क्य क्यां, हुन्नं क्लारम तह । बर्क्स्यादत म्यूनम, स्टब्स्स मश्हात । यस सम्बद्धि सूम, स्टब्स्स द्वामात ॥

कारनक शनित कार्य, वर्षरशंव माहे।
कारन कि स्टब-शेरव, कावि कानि कार्य ।
केवरकत नाति स्त, धनमन स्थरत।
श्रेतकाम शोरन कार्य, मानि द्रुट्य द्रुट्य ।
केवरत्र क्यां कार्य, मानि द्रुट्य द्रुट्य ।
केवरत्र क्यां कार्य, मेथ्र मानि कारम।
किस् ना असम स्त्र, मेथ्र मानि कारम।
मध्मान-नाशीरत कार्य, तक स्वितक।
मध्मान-नाशीरत कार्य, तक स्वितक।
मध्मान-नाशीरत कार्य, तक स्वितक।
सामा-शांदम म्च स्वार्य, काल करत भक्त ॥
स्वार्य स्वार्य श्रीप्र मानि कार्य कार्य ।
कार्य स्वार्य श्रीप्र स्वार्य कार्य ।
कार्य कि निकार कार्य है दिस्तात ॥
कार्य कार्य स्वार्य है दिस्तात ॥

মানুষে মানুষ কেলে, এ গে বড় থেন।
পশতে নরেডে ডারে, রাখে না প্রভেব ঃ
পশুপ্রতি করে লোল, বেরূপ ব্যাভার।
উচিত কি, নরপ্রতি, করা সে প্রকার ঃ
সভাতা কোধার ফারু, সভাতা কোধার গ্র

व्यादभन्त्म रा ।

करने वह रहारत त्नांक, क्रिमिन्स्त वात्र।
नित्रक नत्तन-मीरत, मरना क्रःरथ नात्र ॥
श्रिवांत हाहांकांत्र, क्रिमिन्त करतः।
श्रिक्त-नित्रह-क्रुरत, वह निम क्रुरतः॥
कावना-मांगरत जात्र, माहि शाह शाह ।
वक कामर्थाई मूल, क्रावंहे रहामात्र ॥

क्र क्र वांग कृष्ण, आंथनांत शांख।
अ देखांत मक्ष करत, यक कर्य कांत्ल।
आंथनांत शिठ कृष्ण, क्रिश लांत्न शांका।
' क्रण्कत गांद्धरक, क्रण्क शांति शांका श

कूल नाज़ (एवं कांन कूलीन तांचन। कांन् कूटल जय जात, नांचे निकलन ! मंक कूनकांचिनीरक, श्रीतनंत करत। नांचि जारव जारमत कि, नमा दरवं श्रीत !

বিষ্ণ কাণা, খোঁড়া, বুড়া, না করি বিচার।
পিতা কোনে বিয়া দেয়, বীয় তর্জার।
খনলোতে করে সেই, বিপরীক কাল।
চিরদিন তরে হানে, স্তা-শিরে বাল।
হায় হায়, খনাখার, ফেলে নের জনে।
তেমন বিবাহে কি লো, গুড় ফুল ফরে ?।
ভাতে কি উতরে হয়, মনের প্রণয় ?।
ভাতে কি লো কুলজার, কুল আর রয় ?।
বিবাহ ছো নয় বোল, পিটু নির জাল।
হংখের মনলে মন, পুড়ে হয় খাল।
অবশেষে হা হয় ভা, জনোচর কায়।
যভ অনধের মূল, জনই ভোনার।

मार्थित महत्त्र भटकः योज्येत भयम। मार्थ कारत कार्थास्त्रहकः महित्र मानवन् ॥ সাপ ছুঁ ড়াছুঁড়ি করে, ধনের আশায়।
এর গায়, ওর গ্রায়, সাপেরা দংশায়।
কৈবে যদি বিষ থাকে, চলে পড়ে নাল।
সে নালের পক্ষে হয়, সেই সাপ কাল।
সাপ নোহে থেলা করা, কভু শন সোজ।
চেপে পড়ে তথ্ন, বোজার খাড়ে বেংবা।
বাহিবার জনে জার, থাকে মা ভাষাতা।
দেখিতে দেখিতে হয়, পরাধ বিষোধ।
যত অশর্থের মূল, অর্থই তোমার।
যত অশ্র্থের মূল, অর্থই তোমার।

কাট কাটি হাতে লোক, ধনের আশার।
কাননে বালের মুখে, জনাহাতে যাং।
ধন পাব আশা করি, ছাতে প্রাণ করি।
ভুফানেও নাবিকেরা, বেয়ে যার ভরী।
মেনারা রণের বেশে, রণক্তের ধায়।
ভুর্বিরা নাগরের, ভলায় ভলার ।
কহ উঠে গগণে, কানমে করি ভর।
গন কর্মেতে হোতে, পারে প্রাণনাশ।
ধন-আশা আছে ভাই, নাই কারো ত্রাম।
ধনতরে করে লোক, বিপদ্ স্থীকার।
যত জনর্থের মূল, অর্থই ভোমার।

श्रीकांत्र, श्राकांत्र, श्राभकांत्र, त्रमं ।
स्तांत्र अनत रहा, अर्थित कांत्रभं ॥
यक त्रभ मन्न जिल्ला, अन्नरक अकांत ।
सन रहारक रुग मन, सन मनाशांत ॥
सरन कि कूर्क आरक्ष, रना नारि यात्र ।
कांद्रे लांक " सन सन " कित्रा तिकांत्र ॥
कर सरम घरते एमथ, अनिन्धे अभांत ।
भारभंत केंद्रिक यक, कर्क कव आतं ॥
आनिन्न भरन कुम्क, करत नित्रस्त ।
अञ्जारिन कारण भाज, धरनत आंमत ॥
भिक्षा वाकान्त्र किन, कर्ज वांत्र वांत्र ?।
यक अनर्थात मृल, अर्थदे क्याना ॥

मवात सूर्यत केल्ला, जार्ड घरम गरम।
मवाद वाक्नि त्वाम्, सूथ-जरहयत्॥
किरम सूथी करन, जात, मा करत छेलाव
धन छेलार्ड्डन करन, सूर्यत जामाव॥
धननाड कार्लि करे, सुर्यत जामाव॥
धननाड कार्लि करे, सुर्यत जामाव॥
धन छेलार्ड्डन करे, सुर्यत जामाव॥
धन छेलार्ड्डन त्वाम्, वर्ज द्वाम् क्वा
धन छेलार्ड्डन त्वाम्, वर्ज द्वाम् ॥
धन पाकिरनके जर्वा, त्यांक् कार्या॥
धन पाकिरनके जर्वा, त्यांक् कार्या॥
दम पाकिरनके जर्वा, त्यांक् कार्या॥

(वार्षम्भूमञ्जा

অত্তরে ধন শুধু, বুংকোর আশার। যত অনর্থের দূল, অর্থই তোমার।

क्रवर्षट एक तक, यमनाम् इतः।
दिन्न भिर्म समर्थान, जक कल् मनः ॥
यम कर्षा गठ आहि, यक्ष ठाउ थनः।
अन्तर्वा ६२ मनः, जनाटम मः नमः ॥
कुर्क्ष कि.८७ मनः, ইन्छा थाः काटकः
यमि अन मञ्चलं, नः शाटक छाउ काटकः।
घानमिक जिल्लाय, मानटम भिनाय ॥
ध्वकान नः भाग मनदे, कुर्वेच्छाः। कलः।
कुरुट्यंत म्लायांत, क्यों दिन्यन ॥
यम द्याट क्रियांत, क्यों दिन्यन ॥
यम द्याट क्रियांत, क्यों दिन्यन ॥
यम द्याट क्रियांत, क्यों दिन्यन ॥

ध्यक्ती।

अक्वात महन कति, हुने काति तरे। अञ्चलका कहन हुने, कता मात्र करे। एक्सोरज महनत ह्यास, शंकात शंकात। सहनत श्रुटनेत क्सो, कहिएल मा कांत्र। বুদ্ধিতী হোরে ভূমি, এক চোকী হোলে। বড় হোতে চাও শুধু, দোহ সব হোতে। বিবেচনা কর দিদি, পরিছরি রোষ। मानुरमद लाम मज़, धरमत कि लाम ? । व्यक्ति मित्रां यमि क्रिक्ट, महक्तां करत । ভাছাতে অসির দোষ, কে কোথায় খবে? ষ্ঠি-সহকারে কেউ. কবিলে প্রহার ॥ ভাষাতে ঘটির দোয়, কে করে প্রচার ? ৷ खरलंद कि मांच बारह, जुरन भारत जरत ?। অমলের দেখি কিবা, প্রভিলে অমলে? विश (थार्य (कड धनि, प्र श्रीन मश्होर्द्र। বিদের কি অপরাধ, ভোমার বিচারে ? # বিনামার দোব কিবা, ফোস্টা হোলে পায় ?। বাণিজ্যে কি দোষ, যদি ক্ষতি হয় ভাষ १ ॥ मिडित कि मिथ गरल, में मिशे शिलि १। যোডার কি অপরাহ, পোড়ে খোঁডা হোলে? भारक छेटठे श्रीटङ स्मारल, क्षविदर कि भारक १। <mark>थशक्रश क्या निर्मित, श्रीन उर कोर</mark>ह ॥ ध्द्रभीव मयूनांह, मना मार्ट्स क्रि । বাৰহারে ঘটে মাত্র, যত হিতাহিত। बावशंत-छान शत् शहां एक कलान । बारशंत (मार्य जत्य, जांद्र क्कमांन । गाएं शांव गांत भूनः, जांदं थांव दत्र। ক্রব্য-দোষ গুণ ধরা, অনুচিত হয় #

श्रामहत्ला (नांच मांचे, रमांच गांमहत्त्र। व्यार्थमात कार्य घटि, मान्यत राग्द । धोषां या जारन निनि भरमत वर्गाजात। ধন তাহাদের করে. শুধু অপকার॥ অনেকের ধন আছে, দেখা গার বটে। त्म धरम जारमत कड़, अड माहि घटने तम धन ভारति इस, कुःर्थन करिन । त्म धरमहे इश्र, माना अभिन्छे प्रदेम॥ তা বলে কি ধনে তুনি, ছুষিবে সদাই ।। তোমার কি এনটুকু বিবেচনা মাই 'ছ त्य मानद धमरलानी, हुसे धमणा । ডাবে দোৰ দিতে তুমি, পার সরস্বতি ! ॥ खर्गाट्ड मकल (लांक, नां रेग महोत्। মানৰ বিশেষে ধনে, মান, অপ্যাল ঃ অসতের হাতে ধন, হইলে পতিত। ভাতেই কেবদ হয়, পরার অহিত। যথন সভের করে. মন ধন যায়। জগতের উপকার, কত হয ভায়। त्म धन कृत्थंद्र सग्. मृत्थंद्र कांद्रव ! मीरमङ मीमजा हयु. ८म शरम हत्वं । সে ধন তো এক সাঁহি, থাকে না সঞ্জিত। অনাথ অনাথা নয়, সে ধনে বঞ্জিত 🛭 त्म धरमण्ड अनार्थात. त्राभ निर्वादन । मीमशीम गक्रालंब, छेपन शालम ॥

বসনবিহীনগণে, বস্তু বিভরণ।
কাণা খোঁড়া কুঁজোনের, অভাব মোচন।
বিধবার নেত্রে আর, নাহি থাকে জল।
গৃহহান, গৃহ পায়, স্থলহান, স্থল
ভতএব ধনে দোষ কেন দেও আর।
ধনে কি হয় না বোন, কারো উপকার ?

महत्र छी।

नागरतत प्रांच वर्ष, निथा कि कू नह।
श्रीकः। व कि दिए हें हो, का एक का एक हम।
यात महताम रहा, अमानत मह।
जीराक अमें भारत, वाल अस्तर ।
आदात माधृत मरण, यात महताम।
माधु विल रह्म जात, स्था जि अंका मा।
अमर विल रह्म जात, स्था जि अंका मा।
अमर विल रह्म जात, प्रशा जि अंका मा।
सम या अस्विकत, विलव जथन।
उथन भरन का रह्म, स्था कि का सन।
उथन मर का कार्यकत, रहा मर्स्स का ॥
उथन का कार्यकत, रहा मर्स्स मा।
उथन का कार्यक कार्यका, रहा मर्स्स मा।

কখন কখন, দেখি, এমন আবার। मर या वामर हर, यम हिर्दित जोत !! ধনের ক্ষমতা আছে, মন্দ ক্রিকার। ভাল করিবার শক্তি, তত নাই ভার॥ অসং পাইলে গ্ৰ. নাহি হয় সং। বরণ সে হয় জারো, অধিয় অসৎ । অভ্যব ধন হোতে, শুভাশুভ হয়। আমার যে বিদ্যা বোশ, সে রূপ ভো নয় ॥ यमराजन विना (शास्त्र, क्य मास्मीन। পুর্মভাব তার cel, থাকে না এক তিল ৷ मन्य द्रिष्ट्र शीव छोत, अरकदारत लगः **अमिस समील एमा. अमर एन मग्न** प्र मध यनि विमाधना, करत छेशा खंग। कारता मध्यत्र (महे, गर्थम छथम ॥ অভএব বিদ্যা হোতে, দল করে শিব: কারো ভো করে ন: অপর, কথন জনিত b यथार्थ एवं दिला। छोट. क्यांन दलांच त्स्हें। रव रिना। अभिक्षे करत, रिना सव ८ महै ॥ " विना। विना। " करत लाक, मथात उथात । भारतार प्रदार्थ निकार, क कम भतार ? ॥ পড़ित हु शांक गूँ शि, विमा अरम करे।। (भरा विकास मह, कारत, दिल्ला कि त्मा कहे ? । বছ দূর বিজ্ঞারিত, আমার ভবন। कछ विमा बार्ड जांग, माडे मिक्सन ।

হিতাহিত ছুই হয়, গনেতে তোদার।
কৈবল সাধন হিত, বিন্যাতে আমার ॥
আর বিবানেতে লফিন, নাই প্রয়োক্ষন।
আপনা আপনি ভেবে, দেখনা এখন ॥
বিদ্যা কি গনের চেয়ে, বড় কি লো নয়।
তবে আমি বড় তার; কি আছে সংশয় ৩॥

लक्ती।

ভোনার বিদ্যার গুণ, করিব জ্রাবণ। বিদ্যা সোতে হয় করু, শুন্ত সম্পাদিন। শুনিয়া বিদ্যার গুণ, করিব বিচার। বড় সে ট দোর ভবে, হইতে আনের।

সরস্থ ।

धानिशास कत लिक्ना, कत धानिशास ।
धान सम (गानिक के तिनानि शन-गानि ॥
विभएण कृष्टुिक निनानि, मनो करत माने ।
विमानि मानस करत, समृष्ट कनानि ॥
धानत खब्दानिका, विमानिकरत नामि ।
विमानिका रहार्ड भूग् इस, नामा अञ्चित्त ॥
धारमा विरमान विमानिका, माना नामानि ।
मानुनाम धतनीन, मरानम जानाम ।
धारकारत करत मान, मन्य नावहांत ।
दिख्य करत मान, मन्य नावहांत ।
दिख्य करत मान, मन्य नावहांत ॥

(वादधन्तृष्यः।

मानदमब कूछिसांदक, मूहीकृत करत। गोन्मिक अञ्चकोत, একেবারে হরে ॥ যত পারে হভাবের, নিয়ম বুলায়। विमारिङ्के जार्स दक, माहम जनाय ॥ विना करत बनवान तिथ्व प्रमा। सारत शांतशुर्व करत, यांकरवत मन ॥ काम कारत देवनी थाउँ, विस्तृतका-महिन्। जन्मना वास्त्र जलां, श्रह्मान प्रक्रित প্রিয়ন হাকা সলা, কহিতে শিপায়। রভ করে পিতা লার, মাতার মেবার 🛊 मनां करत बाबरमह. अयुर्व भ्रद्भात । জ্বামান অমিত্য সব, ক্ষিত্য সংস্থার। পর্মেশ সাহি মাত্র, দকলৈ অমার ৪ बर भार जिम्म इक मर्स-भवातात । विमार्गवटन क्या ना ह. रह मर्थन हैं है। विमाद स्थान थिते. (मध्या मा शाहि ।

लक्ती।

অসামান্য শক্তি ধরে, বিন্যাই ভোনার।
নার বার আমান, শুদালে কত বার ।
তবু বড় হইসার, আহে অভিনাম।
বস নিনি! কিশে হবে, এ এম বিনাশ ।

मंद्रश्रही।

नश्मादित थोकिए होटल, हाई तिहू धन।

क भथा खीकात मां, कतिएव कांने, धन १ ॥

ख्यांत्रि डानिएव दोन्, धन नत्र मांत।
दूर्भण धटन डाएन, निटांख अमांत ॥

न मगी.

বিনা ধনে কিশে হয়, জীবন ধারও ?। । ।
ক্ষনাহারে থাকিলে নে, সংশয় জীবন ।
বিনা ধনে পাবে লোক, কেমনে জাতার ?।
ভাবে ধন কেন হয়, নিভান্ত অসার ?॥

সরস্ব 🎒।

स्तर्शियन स्ट. कि कि लो महन है।
वैक्तिर स्ट. शिट कि कि लो महन है।
वहन स्ट. कि शिट को शिट को मिन है।
वहन स्ट. कि स्ट. को स्ट. की स्ट. के स्ट.

ट्याट्यम्मम ।

মানসে কোনেছে ধ্যান, নিতা নিরঞ্জন। · কলিবলৈ যোগা ধামে. কোরেছে গ্রন ॥ मूर्थर उ कारतरह जाती, जीवन गार्भन। दक सभी मश्मारत (थटक, जादनर मजन कि ভাবের ছিল मा किছু, विভব ধরার। मिया निर्मि (कारहिल, श्रीहुउना मात्र # তর কারা স্থাধে ছিল, চিত্র নয় দেই। निकाय क्यांनिटव दर्शम्, श्राम ४४ ८न्हे ॥ धान ऋथ नग़ निक्कः! एवं नाधु भटन । स्थी क्षार्क शास्त्र स्वांक, स्वर्क्ट कानस्म ह ममार्थता धडार्थित, गाँच तकडे हुए। किन्न डांत गत्न यनि, खूर्य नांकि त्य ! ज्या का रहेरज सूथी, भारिता कारम १। दियाल घडन डाइ, सूथ-इएस्यर्व ॥ व्यञ्जन विमाशसम्, ग्रंथ ह्या छ। लाहत । निका धरन काको भोरत. शांदिएए मध्यारण ह दिमा ज्हारम घटडे त्यांग, असूर्य अशाह। আন্দেই তো বুথ জ্যে, স্থ ফিবা আরি। वर्धन (य अवस्थांत्र थोत्य, उद्योगि सन्। সেই অবস্থায় সুখী, হয় লো ভগন # যথন সংসারে সেই, ভারে লো অসার। তথ্য কি ধন প্রতি, দায়া থাকে ভার ?॥ क्वम रत कांन एटड, शंदरम्थ-भारत। यत्म कांत्र माहि वार्त्य, यांन कर्गराटम !

लम्भी।

ভালকপে বুনিলাম, বচন ভোমার।

' তুমি বড়' করিলাম, এখন স্বীকার ।
বয়সেতে বড় তুমি, হোরেছ ধখন।
আমিই তো ছোট লোম, হোয়েছি ওখন ॥
না বুমিয়া করি ছন্তু, ইকি বিপরীত।
বিবাদ উচিত ময়, তোমার সহিত ॥
ভোমা-হোতে ঘত মন, কলাণ সাধম।
সে সকল ভালরপে, বুমেছি এখন ॥
বোলেছি অনেক মন, অহনার-ভরে।
কোরৈছি কতই রাণ, ভোমার উপরে ॥

८वाटभन्मृमग्र ।

ता नकत क्यां निषि ! कड़ निष ७ त। আমায় বাঁধিয়া পুনঃ, রাথ মেহওণে। আর এক কথা দিদি! জিজ্ঞাসি ভোষায় बनाइयां निट्ड स्टब, अर्थनि आंगांत ॥ কোল লোক সৎ আর, অসং কে হয়। धन कि तम् ना मिनि, छोत्र भतिहत् ? ॥ ধন না থাকিলে লোকে, কে কেমন জন : ক্মেনে করিতে বল, পারে নির্পণ ? # স্ফলাবেতে জুটাণ্ডি, মানব এমন। ধন বাই বোলে ভার, শিষ্ঠ আচরণ ম गरम भरम कुकल्लामां, क्लके छार्दाहा বাহিরে ভাষার লোম, না হয় প্রচণ্ড ॥ আবিতি সভাবে সং. জাতে কোল মর। প্রহিতে রত মদা, ভাগার অনুর ॥ थम गाँहे त्वारण निक. कुश कोरह हम । তাহার মনের কথা, প্রকাশ না হয়॥ कहिएक मा भारत रमके. भर-देशक है। কেমনে পাইবে লোক, পরিচয় ডারে 🤈 🛚

সরস্বতী।

দয়মিয় প্রয়েশ, দর্ক-দূলাধার। মানবের ইচ্ছা লোয়ে, করেন বিচার। যাহার যেমন ইচ্ছা, দেই রূপ দেই। তাঁর কাছে কারে। ইচ্ছা, অধিনিত নেই। লোকে ধদি নাহি জানে, লোক কে কেমন।
লাভ কার ক্ষতি ভাঁহে, কি হয় এমন?॥
কি করিলে পরকালে, হবে মাত্র হিউ।
এইরপ সকলেক ভাষাই উচিতে।

এইৰূপে লক্ষ্মী এবং সরস্বতী উভয়েই विदारि काच क्ट्रेंटिंग: लक्षी भव्यकीव नानाविष कानगर्छ छेल्एन-राका अवन क-রিয়া মনে মনে অনেক তর্ক বিতর্ক করিবার পর আপনাকে আর শ্রেষ্ঠা বিবেচনা করিলেন ना वर्षे, किन्तु माडिमां। विमर्श छाव धांत्र क-রিয়া বশিয়া রহিলেন। তাহাতে বৃদ্ধিমতী সরস্থতী দতী স্থায়া অনুজার ভাব বুঝিতে शांतिश महामा-तम्दन व्यद्मक व्यदाध-वाका বলিতে সারম্ভ করিলেন, 'ভিগিনি! ভোমার विद्रम वनन व्यवस्थाकन कविष्ठा व्यामात्र क्रम्प्र বিদীর্ণ হইতেছে। হায় হায়! আমি তোমার নহিত কেন বচশা করিলাম ? জগতের মধ্যে তোমাকে কখনই সামান্যা ৰোধ হয় না। তো-মার দারা লগতের যে কঁড উপকার ছইয়া খাকে ভাহা বলা বায় না। বদিও ভূমি কোন

E Lighter

माउडे वामात निकार खर्छ। इटेंड लाइ मा, তথাপি তোমার মতন মুখা আর কেছই রাই। ভূমি আমার প্রতি অনেক কটু বাকা **প্রয়ো**গ করিয়াছ, কিন্তু কনিষ্ঠ। ভগিনী বলিয়া औনেক সহিষ্ণুতাও করিয়াছি। আমিও বহি কিছু विनश बाकि, डांश्व मत्न कविष् ना, कार्य **८कार्छ। उ**जिनीद निकटिं कनिकांत मान अश-মানের বিষয় কি আছে ? আমি ভোমাকে না দেখিলে অত্যন্ত পরিতাপিতা হ**ই**ট্লতএন সা-मात निरक्जरन श्रुक्ताशत (यमन आंगमन क-রিতে সেইৰাপ এখনও করিবে। নত্রা আমার আর অনুভাপের দীমা থাকিবে না। ভুমি যদি কেবল অনিউকারিণী হ্টুতে, ওবে ভোগাকে গৃহস্থাশ্রমি ব্যক্তি মাত্রেই এতাদুশ সমাদর কা রিত না। তুমি মান সম্ভ্রম প্রাণান করিয়া থাক। ভোমার আশ্রয় গ্রহণ করিলে মনুষা অনেকা-तिक विष्कुत्तर्थे कि का क्षकात सूची हरेएक भारत । ভগিনি! তোমাতে আমাতে যেন কথন বি-**त्ष्रम ना इम्र, छाइ। इट्रेन्ड्रे** भ्रम छाना -বলিয়া স্বীকার করি। তোমাতে আ**মাতে**

षांत्रलम इकेटल ध्वामश्रदलव अमछ लारक-রই অপার অনিই ঘটিবার সম্ভাবনা! আমি পূর্বের বলিয়াছি যে. লোকে কাননবাসী হইয়া ফল মূল আহার করিয়া বিনা ধনে জীবন যাপন করিতে পারে, কিন্তু যথন ধরণীর সমস্তই তো-মার অধিকারভুক্ত তথন তোমার আশ্রের বা-ভীত কেহ্ই জীবন ধারণ করিতে পারে না। তোয়াতে আমাতে কিছুমাত প্রতেদ নাই। তোনার সাহায্য ব্যতীত আমার ক্ষমতা প্রকাশ পার না এবং আনারও সহায়তা ব্য তীত তোমাকেও ক্ষমতা-রহিতা হইতে হয়। আমি এক্ষণে ভোমাকে বর প্রদান করিভেছি বে, পৃথিবীর আবোলরন্ধবনিতা সকলেই তো-मारक, मणानः श्रमान कतिरव। स्य व्यक्ति रहा-মার প্রিয়পাক হইবে সংসারে দে ব্যক্তি ধেমন সম্ভ্রম লাভ করিবে তেমন আর কেহই পা-রিবে না। অতএব দংদারের মধ্যে ভূমিই धना शहरा थाकिटवं"।

লক্ষী এবং সরস্বতীর এইরপ কথোপ-কথন প্রবণ করিতেছি, এমন সময়ে স্বামার: নিজ্ঞান্ত হইল। অকলাৎ নিজ্ঞান্ত হওরাতে আমার মনে যে ক্ষোত জন্মিল তাহা
নাক্ত করা বার না। আমার দমুদ্র সংশর
একেবারে দুরীভূত হটল। অজ্ঞানতঃ বণ্ডঃ
যে জমোদর হইরাছিল; তাহা আর রহিল
না। যে বিনয় চিন্তা করিতে করিতে নিজ্ঞান্ত
হইরাছিলাম, সে বিষয়ের চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত, অবগত হইলাম।

নিক্রাভন্ধ হোলে পরে, করি ছায় ছাব।
কি স্বথে ছিলাম আধি, স্বথের নিক্রায় ।
আরো কত শুনিবারে, ছিল অভিলাষ।
আহা মরি! একেবারে, হলেন হতাশ।
আরে কত জ্ঞান লাভ, করিলাম তায়।
বিশ্বিত হলেম আহা, দে সৰ আশাহ ।

मम्बार ।

শুদ্ধিপত্ত :

香色

জন্ম

मृशिदव

TT

BUP

म्नाकांत्र বিদ্যাধ্ন विमासन বক্ योक् ۵٤ **অ**মুমতি ভারমতি ₹8. অধিনী व्यवीमी . 45 .8 **সত্য**ভার न्धावान ৩২ लाक्षेत्र PAR 9 দীতিমর मी खिन्य ৩৯ বিপরিত বিপরী ক 85 संक यात a5 म सूत्र श मगुन श 95 ্ৰেম্ন (যমন

জন্ম গ্র

ছবিবে

शंह

49

92

è

¢

5